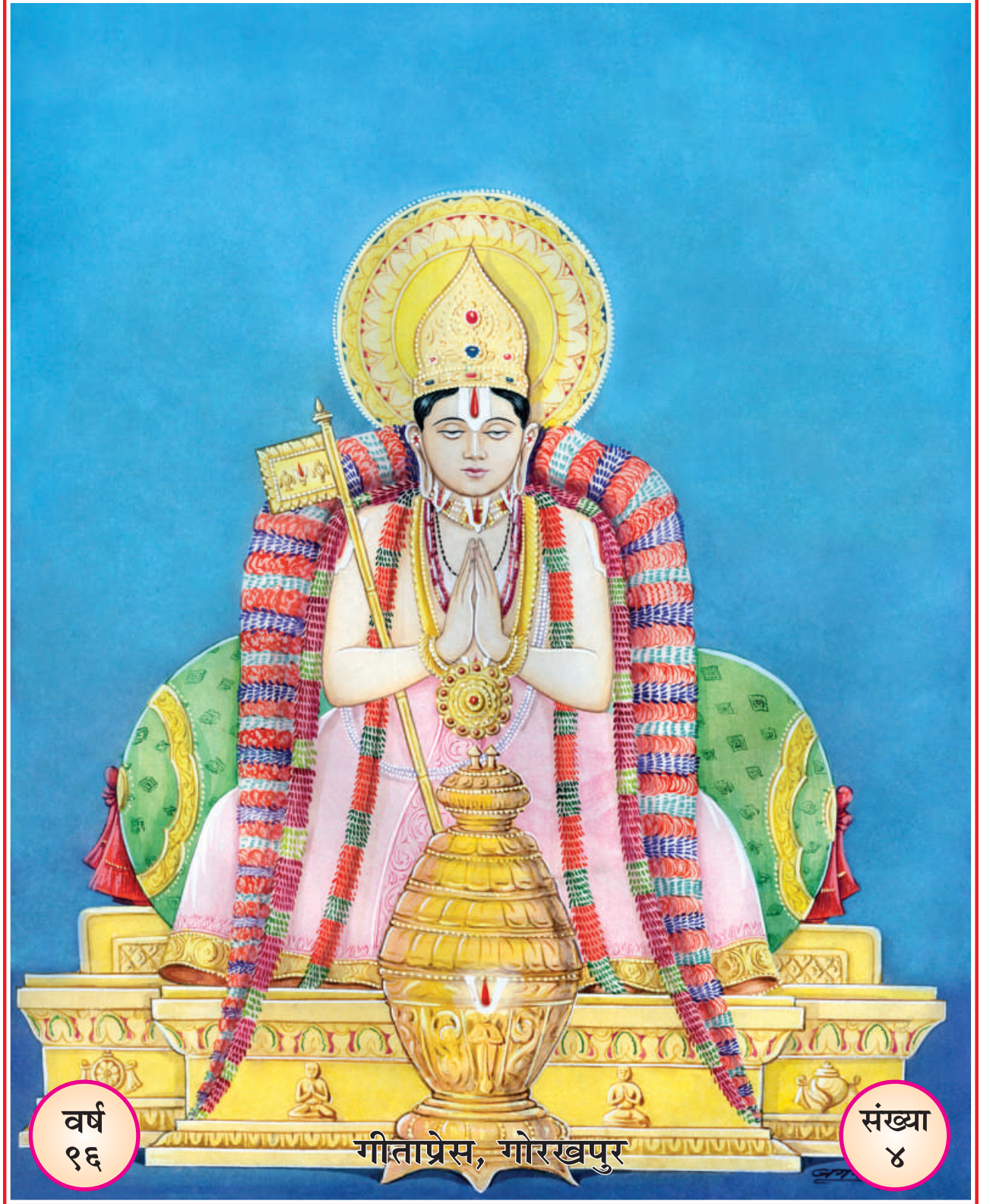


\* ॐ श्रीपरमात्मने नमः \*

# कल्याण

मूल्य १० रुपये



वर्ष  
९६

गीताप्रेस, गोरखपुर

संख्या  
४

सन्त श्रीरामानुजाचार्यजी





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**  
  
**By**  
**Avinash/Shashi**

**Icreator of**  
**hinduism**  
**server!**





मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥



# कल्याण

मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन ।  
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन ॥

वर्ष  
१६

गोरखपुर, सौर वैशाख, वि० सं० २०७९, श्रीकृष्ण-सं० ५२४८, अप्रैल २०२२ ई०

संख्या  
४

पूर्ण संख्या ११४५

## मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।  
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज, पद कंजारुणं ॥  
कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुंदरं ।  
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥  
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्य-वंश निकंदनं ।  
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं ॥  
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं ।  
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥  
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं ।  
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं ॥

[विनय-पत्रिका]

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

(संस्करण १,८०,०००)

कल्याण, सौर वैशाख, वि० सं० २०७९, श्रीकृष्ण-सं० ५२४८, अप्रैल २०२२ ई०, वर्ष १६—अंक ४

## विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
१- मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम.....	३
२- सम्पादकीय .....	५
३- कल्याण.....	६
४- शेषावतार भगवान् श्रीरामानुजाचार्य [ आवरणचित्र-परिचय ] ....	७
५- जीवन-निर्माणकी बातें (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका) .....	८
६- जब अपवित्र विचार घेरते हैं! [ हमारे आन्तरिक शत्रु ] (श्रीकृष्णदत्तजी भट्ट) .....	९
७- श्रीरामनवमी .....	१४
(नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार) .....	१४
८- बोझ प्रभुके कंधेपर (संत श्रीविनोबाजी भावे) .....	१५
९- जाग्रतमें सुषुप्ति [ साधकोंके प्रति ] (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज) .....	१६
१०- तुकारामजीकी शान्ति [ बोध-कथा ] .....	१६
११- नन्दादेवीकी प्राकट्य-कथा .....	१७
१२- सन्त-स्वभाव [ सत्यकथा ] (श्रीचारुचन्द्र शीलजी) .....	१९
१३- नव संवत्सर—नयी ऊर्जाके प्राकट्यका अवसर (प्रो० डॉ० श्रीगिरिजाशंकरजी शास्त्री) .....	२३
१४- संवत्सर-पूजन ... ..	२४
१५- 'नामु राम को कलपतरु' (श्रीगजाननजी पाण्डेय) .....	२५
१६- गुप्त नवरात्र (श्रीकौशलजी पाण्डेय) .....	२६
१७- भागवतकी आत्मा—चतुःश्लोकी (डॉ० श्रीयुत श्रीभागवतशरणजी मिश्रा) .....	२८
१८- वरणीय दुःख है, सुख नहीं [ बोध-कथा ] .....	२९

विषय	पृष्ठ-संख्या
१९- उपनिषदोंमें प्रणव-निरूपण (डॉ० श्रीइन्द्रमोहनजी झा 'सच्चन') .....	३०
२०- सर्वोत्तम धन [ बोध-कथा ] .....	३१
२१- सरल जीवन ही सच्चा ज्ञान है (श्रीदिलीपजी देवनानी) .....	३२
२२- आत्माकी खोज ही गीता है (श्रीओमप्रकाशजी पोद्दार) .....	३३
२३- भगवद्गीताका अद्भुत माहात्म्य [ बोध-कथा ] .....	३६
२४- हिमाचलकी आस्थाकी प्रतीक—श्रीबज्रेश्वरीदेवी [ तीर्थदर्शन ] (श्रीउदयजी ठाकुर) .....	३७
२५- श्रीनारायणदासजी भक्तमाली 'मामाजी' [ संत-संस्मरण ] (परम श्रद्धेय श्रीराधेश्यामजी खेमका, पूर्वसम्पादक 'कल्याण') ..	३९
२६- परमात्मा सर्वव्यापक है [ बोध-कथा ] .....	४१
२७- गोपालनमें सुधारकी अनिवार्यता (श्रीमुल्कराजजी विरमानी) ....	४२
२८- मूर्तिपूजा (ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज) ...	४३
२९- सुभाषित-त्रिवेणी .....	४४
३०- व्रतोत्सव-पर्व [ ज्येष्ठमासके व्रत-पर्व ] .....	४५
३१- कृपापानभूति .....	४६
श्रीदुर्गासप्तशतीके अनुष्ठानसे माँके दिव्य दर्शन .....	४६
३२- पढ़ो, समझो और करो .....	४७
(१) सत्साहित्यके पठनसे जीवन-निर्माण .....	४७
(२) परायी वस्तुका लोभ न करो .....	४८
(३) क्रोध महान् शत्रु है .....	४९
(४) ईमानदारीका उदाहरण .....	४९
(५) निर्भीक पत्रकारका धर्म .....	४९
३३- मनन करने योग्य .....	५०
तृष्णा ही दुःखका कारण .....	५०

## चित्र-सूची

१- सन्त श्रीरामानुजाचार्यजी .....	(रंगीन) .....	आवरण-पृष्ठ
२- मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम .....	( " ) .....	मुख-पृष्ठ
३- नारद-व्यास-संवाद .....	( इकरंगा ) .....	२८
४- श्रीबज्रेश्वरीदेवी मन्दिर, कांगड़ा .....	( " ) .....	३७
५- श्रीनारायणदासजी भक्तमाली 'मामाजी' .....	( " ) .....	३९

एकवर्षीय शुल्क

₹ २५०

जय पावक रवि चन्द्र जयति जय । सत्-चित्-आनंद भूमा जय जय ॥  
जय जय विश्वरूप हरि जय । जय हर अखिलात्मन् जय जय ॥  
जय विराट् जय जगत्पते । गौरीपति जय रमापते ॥

विदेशमें Air Mail }  
शुल्क }

वार्षिक US\$ 50 (₹ 3,000)

पंचवर्षीय US\$ 250 (₹ 15,000)

{ Us Cheque Collection  
{ Charges 6\$ Extra

पंचवर्षीय शुल्क

₹ १२५०

संस्थापक—ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका  
आदिसम्पादक—नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार  
सम्पादक—प्रेमप्रकाश लक्कड़

केशोराम अग्रवालद्वारा गोविन्दभवन-कार्यालय के लिये गीताप्रेस, गोरखपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित

website : gitapress.org

e-mail : kalyan@gitapress.org

☎ 09235400242 / 244

सदस्यता-शुल्क—व्यवस्थापक—'कल्याण-कार्यालय', पो० गीताप्रेस—२७३००५, गोरखपुर को भेजें।

Online सदस्यता हेतु gitapress.org पर Kalyan या Kalyan Subscription option पर click करें।

अब 'कल्याण' के मासिक अङ्क gitapress.org अथवा book.gitapress.org पर निःशुल्क पढ़ें।



[illegible]

चुभकर तुम्हारी बराइयोंको और भी बढ़ा देता है।  
Hinduism Discord Server <https://dsc.gg/>

**याद रखो**—यदि तुम अपने मनमें किसीको बुराई नहीं देखोगे, किसीको अपना वैरी नहीं मानोगे तो शायद ही तुम्हारा कोई वैरी रहेगा; परंतु यदि इसपर भी तुम्हारे प्रति कोई शत्रुता रखे—जिसकी सम्भावना बहुत कम है—बहुत बार तो तुम्हें अपने ही मनके दूषित भावसे दूसरेमें शत्रुपना दिखायी देता है—तो तुम उस शत्रुताका बदला प्रेम, हित और भलाईसे दो। तुम्हारा यह प्रेम, हित और भलाईका व्यवहार उसकी शत्रुताके प्रयत्नको निष्फल कर देगा और परिणाममें उसके मनका शत्रुभाव मित्रभावमें परिणत हो जायगा। यों उसको तुम एक बड़ी विपत्तिसे बचा लोगे और स्वयं तो बचोगे ही।

**याद रखो**—यदि एक भी मनुष्यको तुमने प्रेम देकर घृणा तथा बुराईके विषसे बचा लिया, उसके मनमें प्रेम भर दिया, तो उसके द्वारा समाजमें घृणा तथा बुराईका विष फैलना बन्द हो जायगा। प्रेमके अमृतका प्रसार होगा और इस प्रकार तुम समाजकी बड़ी सेवा कर सकोगे।

**याद रखो**—यदि तुमने बुराईका बदला बुराईसे दिया, तो तुमने बुराईकी जलती हुई आगमें घी और ईंधन झोंक दिया। उससे बुराईकी अग्नि और भी भड़क जायगी और चारों ओर फैलकर उसको, तुमको और पास-पड़ोसियोंको ही नहीं; ग्राम, नगर और देशको भी जलानेमें कारण बन जायगी।

**याद रखो**—यदि तुम प्रेम करोगे—प्रचुर प्रेम करोगे तो बुराईकी, द्वेषकी आगमें पानीकी वर्षा कर दोगे, इससे बुराईकी आग बुझ जायगी। तुम्हारे पास बिखरी हुई—बढ़ी हुई पवित्र प्रेमकी सरिता आयेगी, जो तुम्हारे जीवनको निर्भय, सुखी और

शान्त बना देगी। 'शिव'  
arma | MADE WITH

शेषावतार भगवान् श्रीरामानुजाचार्य

नामसे प्रसिद्ध है और इनका सम्प्रदाय भी 'श्रीसम्प्रदाय' कहलाता है; क्योंकि इस सम्प्रदायकी आद्यप्रवर्तिका श्रीश्रीमहालक्ष्मीजी मानी जाती हैं। यह ग्रन्थ पहले-पहल काश्मीरके विद्वानोंको सुनाया गया था। इनके प्रधान शिष्यका नाम कूरत्तालवार (कूरेश) था। कूरत्तालवारके पराशर और पिल्लन् नामके दो पुत्र थे। रामानुजने पराशरके द्वारा विष्णुसहस्रनामकी और पिल्लन्से 'दिव्यप्रबन्धम्' की टीका लिखवायी। इस प्रकार उन्होंने आलवन्दारकी तीनों इच्छाओंको पूर्ण किया।

श्रीरामानुजने तिरुकोट्टियूके महात्मा नाम्बिसे अष्टाक्षर मन्त्र (ॐ नमो नारायणाय)–की दीक्षा ली थी। नाम्बिने मन्त्र देते समय इनसे कहा था कि ‘तुम इस मन्त्रको गुप्त रखना।’ परंतु रामानुजने सभी वर्णके लोगोंको एकत्रकर मन्दिरके शिखरपर खड़े होकर सब लोगोंको वह मन्त्र सुना दिया। गुरुने जब रामानुजकी इस धृष्टताका हाल सुना, तब वे इनपर बड़े रुष्ट हुए और कहने लगे—‘तुम्हें इस अपराधके बदले नरक भोगना पड़ेगा।’ श्रीरामानुजने इसपर बड़े विनयपूर्वक कहा कि ‘भगवन्! यदि इस महामन्त्रका उच्चारण करके हजारों आदमी नरककी यन्त्रणासे बच सकते हैं तो मुझे नरक भोगनेमें आनन्द ही मिलेगा।’ रामानुजके इस उत्तरसे गुरुका क्रोध जाता रहा, उन्होंने बड़े प्रेमसे इन्हें गले लगाया और आशीर्वाद दिया। इस प्रकार रामानुजने अपनी समदर्शिता और उदारताका परिचय दिया।

श्रीरामानुजाचार्यजी (१०१७—११३७ ई०)–के जन्मकी सहस्राब्दीके उपलक्ष्यमें हैदराबादके मुचिन्तल नामक स्थानपर चिन्ना जीयर ट्रस्टद्वारा १००० करोड़की लागतमें उनकी २१६ फुट ऊँची पंचधातुसे निर्मित ‘स्टैच्यू ऑफ इक्वलिटी’ (समताकी प्रतिमा)–का अनावरण गत बसन्तपंचमी (५ फरवरी, २०२२ ई०)–को माननीय प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदीजीद्वारा किया गया। यह प्रतिमा स्वयंमें अद्वितीय, मनमोहक एवं दर्शनीय है।



❁ विचारवान् पुरुषोंने लोभको पापका जन्मदाता बताया है। लोभवृत्ति जागनेपर न्यायान्याय और सत्यासत्यका विचार नहीं ठहर सकता। दूसरोंको धोखा देना, ठगना, धनके लिये नीच-से-नीच कर्म कर बैठना लोभी मनुष्यका स्वभाव-सा बन जाता है।



[illegible]

इसीसे उसके रोम-रोममें स्फूर्ति रहती है।

यही उसका बल है, यही उसकी शक्ति है, यही उसका ओजस् है।

नारीका लावण्य, उसकी लोनाई, उसका नमक, उसका सलोनापन यही है।

सृष्टिका चक्र इसीसे चलता है।

माताओंकी गोद इसीसे हरी-भरी होती है।

आँगनकी खिलखिलाहटका रहस्य इसीमें छिपा हुआ है।

$$\times \qquad \qquad \qquad \times \qquad \qquad \qquad \times$$

वीर्य ही वह संजीवनी शक्ति है, जिसपर मानवके शरीरका सारा ढाँचा खड़ा है।

आयुर्वेद कहता है कि रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और वीर्य—ये सात धातुएँ स्वयं स्थित रहकर मानव-शरीरको धारण करती हैं।

एते सप्त स्वयं स्थित्वा देहं दधति यन्नृणाम् ।

रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः ॥

$\times$                        $\times$                        $\times$

जानते हैं, वीर्य कितनी मूल्यवान् वस्तु है ?

संश्रुतमें उसकी व्याख्या की गयी है—

रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदः प्रजायते ।

मेदसोऽस्थि ततो मज्जा मज्जायाः शुक्रसम्भवः ॥

हम जो भोजन करते हैं, उससे सबसे पहले रस बनता है। कूड़ा मल-मूत्र-पसीना आदिके रूपमें बाहर निकल जाता है।

रससे रक्त बनता है ।

रक्तसे मांस बनता है।

मांससे मेद और मेदसे अस्थि बनती है।

अस्थिसे मज्जा बनती है।

मज्जासे वीर्य बनता है।

$\times$                                    $\times$                                    $\times$

एक धातुसे दूसरी धातु बननेमें ५ दिन लगते हैं।

६ धातुओंके बननेमें  $6 \times 5 = 30$  दिन लगते हैं।

अर्थात् हम आज जो खायेंगे, वह एक महीने बाद

Hinduism Discord Server <https://dsc.gg/dharma> | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shiv

सो भी किस हिसाबसे ?

पक्का १मन=४० सेर भोजन=१ सेर रक्त=२ तोला  
वीर्य!

हम रोज यदि १ सेर भोजन करें, तो तीस दिनमें मुश्किलसे डेढ़ तोला वीर्य तैयार होगा।

$\times$                        $\times$                        $\times$

जो वीर्य इतना मूल्यवान् है, उसीकी बर्बादीमें हम कैसे शाहखर्च हैं, सोचकर आश्चर्य होता है!

एक बारके सहवासमें डेढ़ तोलेसे कम वीर्यका क्षरण नहीं होता।

मतलब, एक बारके सम्भोगमें महीनेभरकी कमाई गोल!

X                      X                      X

बापूके शब्दोंमें हम पलभरके लिये भी नहीं सोचते कि 'क्षणिक रसके लिये मैं क्यों तेजहीन होऊँ ? जिस वीर्यमें प्रजोत्पत्तिकी शक्ति भरी हुई है, उसका पतन क्यों होने दूँ ? और इस तरह ईश्वरकी दी हुई बख्शीशका दुरुपयोग करके मैं ईश्वरका चोर क्यों बनूँ ? जिस वीर्यका संग्रहकर मैं वीर्यवान् बन सकता हूँ, उसका पतन करके वीर्यहीन क्यों बनूँ ?'

$\times$                        $\times$                        $\times$

कहा गया है—

मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात् ।

मक्खन निकालनेके लिये जिस तरह दूध मथा जाता है, ईखसे रस निकालनेके लिये जिस तरह ईखको निचोड़ना पड़ता है, उसी तरह विन्दुपातके लिये सारे शरीरको मथ डाला जाता है!

तभी तो वीर्यके क्षरणके उपरान्त शरीरकी सभी नस-नाड़ियाँ शिथिल हो जाती हैं। लगता है शरीरमें अब कोई दम नहीं रह गया है।

चाणक्यने इसीलिये लिखा है—

पुराणान्ते श्मशानान्ते मैथुनान्ते च या मतिः ।

सा मतिः सर्वदा चेत् स्यात् को न मच्येत बन्धनात् ॥

‘पुराण सुननेके बाद, श्मशानसे लौटनेके बाद  
 मैं MADE WITH LOVE BY Avinash/Shr  
 मैथुन करनेके उपरान्त जो बुद्धि रहती है,



वह यदि सदैव बनी रहे, तो कौन न बन्धनसे मुक्त हो जाय!’

× × ×

विषयवासनासे हमारी अक्लपर पर्दा पड़ जाता है। तभी न हम बार-बार गिरकर और पछता-पछताकर फिर भी गिरते ही चले जाते हैं।

× × ×

आज हमारा राष्ट्र इतना दुर्बल है, अशक्त है, कमजोर है, क्षय-जैसे भयंकर रोगोंका शिकार है, क्यों? जवानीमें ही हमारी आँखें गढ़ोंमें धँस जाती हैं, गाल पिचक जाते हैं, युवतियाँ एकाध बच्चेको ही जन्म देनेके बाद वृद्धा बन जाती हैं, बच्चे अकाल ही कालके गालमें समा जाते हैं—इसका कारण क्या है?

यही कि हम वासनाके कीड़े बन गये हैं। भोग-विलासके पीछे दीवाने बने घूमते हैं। वीर्यनाशके नाना उपायोंद्वारा अपनेको निचोड़ डालनेमें ही हमने अपने जीवनकी सार्थकता मान ली है। क्षणिक सुखके लिये अपना सर्वनाश करनेमें ही हमें ‘मज़ा’ आता है!

और, यह ‘मज़ा’ ही हमें ले डूबता है। नतीजा सामने है।

हमारा स्वास्थ्य चौपट हो रहा है, हमारा चरित्र स्वाहा हो रहा है, धन नष्ट हो रहा है और हम विवश हो रहे हैं—कीड़ों-मकोड़ोंसे भी गया-गुजरा जीवन बितानेके लिये!

× × ×

इसीसे बचानेके लिये हमारे शास्त्रोंमें ब्रह्मचर्य-पालनपर इतना जोर दिया गया है। अष्ट प्रकारके मैथुनसे बचनेके लिये इसीलिये कहा गया है कि उसीमें मानवजातिका कल्याण निहित है। उसका विवेचन भी कितना सूक्ष्म है, देखिये—

**स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्।**  
**संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्पत्तिरेव च॥**  
**स्मरण**—पतनकी पहली सीढ़ी है—अपवित्र स्मरण। कामका चिन्तन, गन्दी बातोंका स्मरण जहाँ किया कि पापका पथ प्रशस्त हुआ। पतनकी शुरुआत

यहींसे होती है।

**कीर्तन**—गन्दे विषयोंकी चर्चा करना, मुखसे गन्दी अश्लील बातें निकालना, विकारोत्तेजक गीत गाना, गन्दा अश्लील साहित्य पढ़ना, विषयवार्तामें रस लेना भी पतनका एक प्रकार है।

**केलि**—कामवासनासे केलि (क्रीड़ा) करना, हँसना, गुदगुदाना, अंगोंका स्पर्श करना, ताश-चौपड़ आदि खेलना भी पतनका एक प्रकार है।

**प्रेक्षण**—कामासक्त होकर किसीको टेढ़ी-तिरछी नजरोंसे देखना, किसीको अस्त-व्यस्त रूपमें, नग्न अथवा अर्धनग्न-अवस्थामें, स्नान करते हुए, बाल झाड़ते हुए देखना, गन्दे चित्र, नाटक, सिनेमा, नौटंकी आदि देखना, उसमें रस लेना भी पतनका एक प्रकार है।

**गुह्यभाषण**—एकान्तमें, पतनविषयक गुप्त और रहस्यपूर्ण बातें करना भी पतनका एक प्रकार है।

**संकल्प**—अपवित्र संकल्प करना, कामवासना चरितार्थ करनेका विचार करना भी पतनका एक प्रकार है।

**अध्यवसाय**—पतनके लिये प्रयत्नशील होना, उसके लिये आगे बढ़ना, वासनापूर्तिके लिये भाँति-भाँतिकी चेष्टाएँ करना भी पतनका एक प्रकार है।

**क्रियानिष्पत्ति**—इन्द्रियोंके हाथका खिलौना बनकर पतनके गड़हेमें गिर जाना पतनकी पराकाष्ठा है। पिछले सभी प्रकारोंकी अन्तिम परिणति इसीमें होती है।

× × ×

पुरुष हो या स्त्री, युवक हो या युवती, किशोर हो या किशोरी—जो भी व्यक्ति पतनके इन आठ प्रकारोंमेंसे एक भी प्रकारमें रस लेता है, वह अपने पतनका पथ प्रशस्त करता है।

ये सभी साधन गिरानेवाले हैं, वीर्यनाश करनेवाले हैं। इनसे शक्तिका क्षय होता है, रोग और बीमारियाँ पनपती हैं, शरीर खोखला होता है, धन-सम्पत्ति नष्ट होती है, स्वास्थ्य चौपट होता है, चरित्र स्वाहा होता है, सम्मान जाता है, अपमान और तिरस्कार होता है।



सारे संसारकी सम्पत्ति, सारे संसारकी सुन्दरियाँ एक व्यक्तिके पास लाकर जुटा दी जायँ, फिर भी यह कहना कठिन है कि उस व्यक्तिकी तृप्ति हो जायगी।

 $\times \qquad \qquad \qquad \times \qquad \qquad \qquad \times$ 

पैर कब्रमें लटक रहे हैं, शरीर जर्जर है, हाथ उठते नहीं, आँखोंसे सूझता नहीं, कानोंसे ठीक सुन नहीं पड़ता, सभी अंग जवाब दे चुके हैं—ऐसे वृद्धोंमें भी विकार जाग्रत् होते देखा गया है ! जिन्दगीभर भोग भोग चुके हैं, फिर भी उनसे अरुचिका कोई नाम नहीं ! सुलभ हो और मकरध्वज तथा तिलामस्ताना उनकी नसोंमें खानी ला सके, तो वे उसका भी उपभोग करनेसे नहीं चकेंगे ।

मुसकराकर कह उठेंगे—‘शरीर बूढ़ा हो गया तो क्या दिल भी बूढ़ा हो गया!’

लाख कोई समझाये—

‘कदम सूए मरकद नजर सूए दुनिया,  
कहाँ जा रहे हो, किधर देखते हो!’  
हमपर कोई असर होनेवाला नहीं।

$$\times \qquad \qquad \qquad \times \qquad \qquad \qquad \times$$

मतलब, जबतक विषयोंमें आसक्ति बनी है, भोगोंकी वासना जीवित है, तबतक बूढ़ा हो या जवान, अपवित्र विचार घेरेंगे ही।

 $\times \qquad \qquad \qquad \times \qquad \qquad \qquad \times$ 

माथा मुड़ा लेनेसे, कपड़े रँग लेनेसे, घर-बार छोड़ देनेसे, परिग्रहसे छुटकारा ले लेनेसे, धर्मोपदेशक, कथावाचक, साधु-संन्यासी, मुल्ला-पादरीका चोगा पहन लेनेसे विषयोंकी वासना जाती रहेगी—ऐसा सोचना भी गलत है।

‘मन न रँगाये, रँगाये जोगी कपड़ा!’—वाली स्थिति जबतक बनी है, तबतक पतनका खतरा बना ही रहेगा।

$\times$ 
 $\times$ 
 $\times$

विनोबाने ठीक ही कहा है—

‘कोई यदि गुफामें जाकर बैठ जाय, तो भी उसकी बित्तेभर लंगोटीमें संसार ओत-प्रोत (भरा) रहता है। यह

लंगोटी उसकी ममताका सार-सर्वस्व बन बैठती है। जैसे छोटेसे नोटमें हजार रुपये भरे रहते हैं, वैसे ही उस छोटी-सी लंगोटीमें भी अपार आसक्ति भरी रहती है। चाहे घरमें रहो या जंगलमें, आसक्ति तो पास ही बनी रहती है।’

जरूरत है इस आसक्तिको मिटानेकी।

फिर चाहे घरमें रहो, चाहे वनमें, गृहस्थ रहो या  
संन्यासी—सब ठीक है।

अपवित्र विचार तभीतक आते हैं, जबतक यह आसक्ति बनी हुई है। यह मिट जाय तो अपवित्र विचार आ ही नहीं सकते।

 $\times \qquad \qquad \qquad \times \qquad \qquad \qquad \times$ 

अपवित्र विचारोंसे मुक्त होनेके लिये, जीवन और जगत्में सफलता पानेके लिये, सुखी और स्वस्थ रहनेके लिये अपना, राष्ट्रका और विश्वका कल्याण करनेके लिये हमें अपने स्वेच्छाचारपर रोक लगानी होगी और ब्रह्मचर्यका व्रत लेकर पूरी सावधानीसे उसका पालन करना होगा।

$\times$                        $\times$                        $\times$

ब्रह्मचर्यका पालन करनेमें हम इसीलिये असमर्थ रहते हैं कि हम हृदयसे उसका पालन नहीं करना चाहते। हम चाहें तो क्या नहीं कर सकते?

बापूने ठीक लिखा है—

‘व्रत बन्धन नहीं, स्वतन्त्रताका द्वार है। व्रतसे अपनेको बाँधना मानो व्यभिचारसे छूटकर एक पत्नीसे सम्बन्ध रखना है। ‘मेरा तो विश्वास प्रयत्नमें है। व्रतके द्वारा मैं बँधना नहीं चाहता—यह वचन निर्बलतासूचक है। इसमें छिपे-छिपे भोगकी इच्छा रहती है। जो वस्तु त्याज्य है, उसे सर्वथा छोड़ देनेमें कौन-सी हानि हो सकती है? जो साँप मुझे डँसनेवाला है, उसे मैं निश्चयपूर्वक हटा देता हूँ, हटानेकी केवल चेष्टा ही नहीं करता; क्योंकि मैं जानता हूँ कि महज प्रयत्नका परिणाम होनेवाला है—मृत्यु।’

ब्रह्मचर्यका व्रत लिया नहीं, कि अपवित्र विचारोंसे छुटकारा मिला।



## श्रीरामनवमी

( नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार )

श्रीरामनवमी सारे जगत्के लिये सौभाग्यका दिन है; क्योंकि अखिल विश्वपति सच्चिदानन्दधन श्रीभगवान् इसी दिन दुर्दान्त रावणके अत्याचारसे पीड़ित पृथ्वीको सुखी करने और सनातन-धर्मकी मर्यादा-स्थापन करनेके लिये मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामके रूपमें प्रकट हुए थे। श्रीराम केवल हिन्दुओंके ही 'राम' नहीं हैं, वे अखिल विश्वके प्राणाराम हैं। भगवान् श्रीराम और भगवान् श्रीकृष्णको केवल हिन्दूजातिकी सम्पत्ति मानना उनके गुणोंको घटाना है, असीमको सीमाबद्ध करना है। विश्वचराचरमें आत्मरूपसे नित्य रमण करनेवाले और स्वयं ही विश्व-चराचरके रूपमें प्रतिभासित सर्वव्यापी सर्वान्तर्यामी सर्वरूप नारायण किसी एक देश या व्यक्तिकी ही वस्तु कैसे हो सकते हैं? वे सबके हैं, सबमें हैं, सबके साथ सदा संयुक्त हैं और सर्वमय हैं। जो कोई भी जीव उनकी आदर्श मर्यादालीला—उनके पुण्यचरित्रका श्रद्धापूर्वक गान, श्रवण और अनुकरण करता है, वही पवित्र-हृदय होकर परम सुखको प्राप्त कर सकता है। श्रीरामके समान आदर्श पुरुष, आदर्श धर्मात्मा, आदर्श नरपति, आदर्श मित्र, आदर्श भाई, आदर्श पुत्र, आदर्श गुरु, आदर्श शिष्य, आदर्श पति, आदर्श स्वामी, आदर्श सेवक, आदर्श वीर, आदर्श दयालु, आदर्श शरणागत-वत्सल, आदर्श तपस्वी, आदर्श सत्यवादी, आदर्श दृढ़प्रतिज्ञ और आदर्श संयमी और कौन हुआ? जगत्के इतिहासमें श्रीरामकी तुलनामें एक श्रीराम ही हैं। श्रीरामने साक्षात् परमपुरुष परमात्मा होनेपर भी जीवोंको सत्यपथपर आरूढ़ करानेके लिये ऐसी आदर्श लीलाएँ कीं, जिनका अनुकरण सभी लोग सुखपूर्वक कर सकते हैं। उन्हीं हमारे श्रीरामका पुण्य प्राकट्य-दिवस चैत्र शुक्ला नवमी है। इस सुअवसरपर सभी लोगोंको, खास करके उनको, जो श्रीरामको साक्षात् भगवान् और अपने आदर्श पूर्वपुरुषके रूपमें अवतरित मानते हैं, श्रीराम-जन्मका पुण्योत्सव मनाना चाहिये। इसलिये उत्सवका प्रधान उद्देश्य होना चाहिये श्रीरामको प्रसन्न करना और श्रीरामके आदर्श गुणोंका अपनेमें विकासकर श्रीरामकृपा

प्राप्त करनेका अधिकारी बनना। अतएव विशेष ध्यान श्रीरामके आदर्श चरित्रके अनुकरणपर ही रखना चाहिये। विधि इस प्रकार की जा सकती है—

१-चैत्र शुक्ल १ से चैत्र शुक्ल ९ तक नौ दिन उत्सव मनाया जाय।

२-प्रत्येक मनुष्य (स्त्री, पुरुष, बालक) प्रतिदिन अपनी रुचिके अनुसार श्रीरामके दो अक्षरी, पंचाक्षरी या चार अक्षरी\* मन्त्रका नियमपूर्वक जप करे। पहले दिन नियम कर ले, उसीके अनुसार नौ दिनतक करते रहना चाहिये। कम-से-कम १०८ मन्त्रका जप प्रतिदिन हो जाना चाहिये। उत्साह और समय मिले, तो नौ दिनमें नौ लाख नामका जप कर सकते हैं।

३-प्रतिदिन सुबह या शामको कुछ समयतक नियमित रूपसे श्रीराम-नामका कीर्तन हो।

४-श्रीरामायणका नौ दिनोंमें पूरा पाठ किया जाय। वाल्मीकि, अध्यात्म या श्रीगोसाईंजीकृत मानस इनमेंसे अपनी रुचिके अनुसार किसी भी रामायणका पाठ कर सकते हैं। जो ऐसा न कर सकें, वे कुछ समयतक प्रतिदिन रामायण बाँचें या सुनें।

५-माता-पिताके चरणोंमें प्रतिदिन प्रातःकाल प्रणाम करें।

६-यथासाध्य खूब सावधानीसे सत्य भाषण करें।

७-घरमें माता, पिता, भाई, भौजाई, स्वामी, स्त्री, नौकर, मालिक सभी आपसमें प्रेम रखें, अपने अच्छे बर्तावसे सबको प्रसन्न रखें, किसीसे झगड़ा न करें।

८-ब्रह्मचर्यका पालन करें।

९-रामनवमीका व्रत करें।

१०-रामनवमीके दिन श्रीरामजन्मोत्सव मनाया जाय, श्रीराम-कथा हो, सभाएँ की जायँ, जिनमें रामायणका प्रवचन और रामायण-सम्बन्धी शिक्षाप्रद व्याख्यान हो। कहने और सुननेवाले अपने अन्दर श्रीरामके-से गुण लावें, इसके लिये दृढ़ निश्चय करें और श्रीरामसे प्रार्थना करें।

११-आपसके मेलमें बाधा न आती हो तो श्रीरामकी



**साधकोंके प्रति—**

# जाग्रत्में सुषुप्ति

( ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसखदासजी महाराज )

एक बहुत सुगम बात है। उसे विचारपूर्वक गहरी रीतिसे समझ लें तो तत्काल तत्त्वमें स्थित हो जायँ। जैसे राजाका राज्यभरसे सम्बन्ध होता है, वैसे ही परमात्मतत्त्वका मात्र वस्तु, व्यक्ति, क्रिया आदिके साथ सम्बन्ध है। राजाका सम्बन्ध तो मान्यतासे है, पर परमात्माका सम्बन्ध वास्तविक है। हम परमात्माको भले ही भूल जायँ, पर उसका सम्बन्ध कभी नहीं छूटता। आप चाहे युग-युगान्तरतक भूले रहें तो भी उसका सम्बन्ध सबसे एक समान है। आपकी स्थिति जाग्रत्, स्वप्न या सुषुप्ति किसी अवस्थामें हो, आप योग्य हों या अयोग्य, विद्वान् हों या अनपढ़, धनी हों या निर्धन, परमात्माका सम्बन्ध सब स्थितियोंमें एक समान है। इसे समझनेके लिये युक्ति बताता हूँ। आप मानते हैं कि बालकपनमें मैं था, अभी मैं हूँ और आगे वृद्धावस्थामें भी मैं रहूँगा। बालकपन, जवानी और वृद्धावस्था—तीनोंका भेद होनेसे 'था', 'हूँ' और 'रहूँगा' ये तीन भेद हुए, पर अपने होनेपनमें क्या फर्क पड़ा ? भूत, वर्तमान और भविष्य—तीनोंमें अपना होनापन (सत्ता) तो एक ही रहा। अतः आप कैसे भी हों, कैसे भी रहें, आपकी सत्ता एक समान अखण्ड रहती है। आपका कभी अभाव नहीं होता। वह सत्ता ही शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदिको सत्ता-स्फूर्ति देती है। वह शरीरादिके आश्रित नहीं है। इससे यह सिद्ध हुआ कि आप हरदम 'है' में स्थित रहते हैं। जड़ वस्तु, क्रिया आदिका सम्बन्ध न रखकर 'है' से सम्बन्ध रखना है। यह जाग्रतमें सृष्टि है।

वह सत्ता मन, बुद्धि, इन्द्रियों, शरीरकी क्रियाओंमें अनस्युत है। वही मन, बुद्धि आदिका प्रकाशक, आधार

है। उस सर्व-प्रकाशक, सर्वाधारमें हमें स्थित रहना है। वह सत्ता सदा ज्यों-की-त्यों रहती है। जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, स्थिरता, चंचलता, योग्यता, अयोग्यता, बालकपन, जवानी, वृद्धावस्था, विपत्ति, सम्पत्ति, विद्वत्ता, मूर्खता आदि सभी उस सत्तासे प्रकाश पाते हैं। वस्तुतः उसमें आपकी स्थिति स्वतःसिद्ध है। केवल उसकी ओर लक्ष्य, दृष्टि करनी है। शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि आदिके साथ सम्बन्ध ही मोह है। इस मोहका नाश होनेपर स्मृति जाग्रत् हो जाती है—‘**नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा**’ (गीता १८।७३)। स्मृतिका अर्थ—जो बात पहलेसे ही थी, उसकी याद आ गयी। कोई नया ज्ञान होना स्मृति नहीं है। अब चाहे कुछ हो जाय, चाहे कोई व्यथा आ जाय, अपनी सत्तामें क्या फर्क पड़ता है? केवल अपनी सत्ताकी ओर दृष्टि करनी है, फिर इसी क्षण जीवन्मुक्ति है। इसमें कोई अभ्यास नहीं करना है।

सत्ताकी ओर दृष्टि न करें, तब भी वह वैसी-की-वैसी ही रहती है। पर उस ओर दृष्टि न करनेसे आप अपनी स्थिति क्रियाओं, पदार्थों, अवस्थाओं आदिमें मानते हैं। भोजन करते समय 'मैं खाता हूँ', जल पीते समय 'मैं पीता हूँ', जाते समय 'मैं जाता हूँ' आदि सब स्थितियोंमें 'हूँ' समान ही रहता है। यदि 'मैं' को हटा दें तो 'हूँ' नहीं रहेगा, अपितु 'है' रहेगा। वह 'है' सदा ज्यों-का-त्यों रहता है।

खोया कहे सो बावरा पाया कहे सो कूर।

पाया खोया कुछ नहीं ज्यों-का-त्यों भरपूर॥

इस 'है' में स्थित होते ही अखण्ड समाधि, जाग्रत, सषष्टि हो जाती है।

बोध-कथा—

# तूकारामजीकी शान्ति

संत तुकारामजी अपने खेतसे गन्ने ला रहे थे। रास्तेमें लोगोंने गन्ने माँगे, उन्होंने दे दिये। एक गन्ना बच रहा, उसे लेकर वे घर पहुँचे। घरमें बड़ी गरीबी थी और भोजनका अभाव था। फिर, उनकी पत्नी जीजीबाई थी भी बड़े करारे स्वभावकी। उसने झुंझलाकर गन्ना उनके हाथसे छीन लिया और उसे बड़े जोरसे उनकी पीठपर दे मारा। गन्नेके दो टुकड़े हो गये। तुकारामजीने हँसकर कहा—‘हम दोनोंके खानेके लिये मझे दो टुकड़े करने ही पड़ते। तमने सहज ही कर दिये, बड़ा अच्छा किया।’



वेत्रवतीके इस प्रकार कहनेपर राजा सिन्धुद्वीपने भी उसे स्वीकार कर लिया। समय पाकर शीघ्र ही उससे पुत्रकी उत्पत्ति हुई। उस बालकमें बारह सूर्यो—जैसा तेज था। वेत्रवतीके उदरसे जन्म होनेके कारण वह वेत्रासुरके नामसे प्रसिद्ध हुआ। उसमें पर्याप्त बल था। उसके तेजकी सीमा न थी। धीरे-धीरे वह प्राग्ज्योतिषपुर (कामरूप-आसाम)—का नरेश बन गया और युवा होनेपर तो उसके बल-विक्रम बहुत बढ़ गये। उसने अब महायोगशक्तिद्वारा सात द्वीपोंवाली इस सम्पूर्ण पृथ्वीको जीत लिया। बादमें कालकेयोंको जीतनेके लिये उसने मेरु-पर्वतपर चढ़ाई की। जब वह असुर इन्द्रके पास गया तो वे भयसे वहाँसे भाग चले। अग्निने तो उसे देखते ही अपना स्थान छोड़ दिया। ऐसे ही यम, निर्ऋति और वरुण—ये सब-के-सब उसके आनेपर अपने स्थानसे हटते गये। अन्तमें इन्द्रप्रभृतिको साथ लेकर वरुणदेवता वायुदेवताके संनिकट गये। फिर पवनदेव भी इन्द्र आदि समस्त देवताओंके सहित धनाध्यक्ष कुबेरके पास पहुँचे। शंकरजी कुबेरके मित्र हैं; अतः धनाध्यक्ष कुबेर देवताओंको साथ लेकर शंकरजीके पास पधारे। राजन्! इतनेमें बलाभिमानी वेत्रासुर भी गदा लिये हुए कैलासपर जा पहुँचा। इधर भगवान् शिव उसे अवध्य

समझकर देवताओंके साथ ब्रह्मलोक पहुँचे। वहाँ पुण्यकर्म करनेवाले बहुत-से देवता और सिद्धोंका समाज उनकी स्तुति कर रहा था। उस समय जगत्की रचना करनेमें कुशल ब्रह्माजी भगवान् विष्णुके चरणसे प्रकट हुई गंगाके पावन जलमें प्रविष्ट होकर क्षेत्रज्ञ परमात्माकी माया गायत्रीका नियमपूर्वक जप कर रहे थे। अब देवता बड़े जोरसे चिल्लाकर कहने लगे—‘प्रजाओंकी रक्षा करनेवाले भगवन्! हमें बचाइये। वेत्रासुरसे हम समस्त देवता और ऋषि अत्यन्त भयभीत हो गये हैं। आप हमारी रक्षा करें! रक्षा करें!’

देवताओंके इस प्रकार पुकार मचानेपर ब्रह्माजीकी दृष्टि वहाँ आये हुए उन देवताओंकी ओर गयी। वे सोचने लगे—‘अहो! भगवान् नारायणकी माया बड़ी विचित्र है। इस विश्वका कोई भी स्थान उससे रिक्त नहीं है। असुरों और राक्षसोंसे भला मेरा क्या सम्बन्ध?’ वे इस प्रकार अभी चिन्तन कर ही रहे थे कि तबतक वहाँ एक अयोनिजा कन्या प्रकट हो गयी। उसका शरीर श्वेतवस्त्रोंसे सुशोभित हो रहा था। उसके गलेमें माला तथा मस्तकपर किरीट उद्भासित हो रहा था। उसकी कान्ति अत्यन्त उज्ज्वल थी तथा उसकी आठ भुजाएँ थीं, जिनमें क्रमसे शंख, चक्र, गदा, पाश, शक्ति, तलवार, घण्टा और धनुष—ये दिव्य आयुध सुशोभित हो रहे थे। वह देवी तूणीर आदि अन्य सभी युद्धोपकरणोंसे भी सुसज्जित होकर जलसे बाहर निकल पड़ी। वह महायोगेश्वरी परब्रह्म परमात्माकी शक्ति सिंहपर समासीन थी। अब सहसा वह अनेक रूप धारणकर सभी असुरोंके साथ युद्ध करने लगी। उस देवीमें अपार शक्ति थी। उसके पास बहुत-से दिव्य अस्त्र थे। इस प्रकार देवताओंके वर्षसे यह युद्ध एक हजार वर्षोंतक चलता रहा और अन्तमें इस संग्राममें देवीद्वारा भयंकर वेत्रासुर मार डाला गया। अब देवताओंकी सेनामें बड़े जोरसे आनन्दकी ध्वनि होने लगी। उस दैत्यकी मृत्यु हो जानेपर सभी देवता युद्धभूमिमें ही—‘भगवती! आपकी जय हो! जय हो!’ कहकर स्तुति-प्रणाम करने लगे।

भगवान शंकरने भी उनकी स्तुति की

तत्पश्चात् देवतालोग भी बड़े उच्चस्वरसे उन परमेश्वरीकी जयध्वनि करने लगे। अबतक ब्रह्माजी जलमें जप ही कर रहे थे। अब जब जयध्वनि उन्हें श्रवणगोचर हुई तो वे जलसे बाहर निकले और देखा, परम कुशल देवी सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न करके सामने विराजमान हैं। अब उन्होंने यह तो भलीभाँति जान लिया कि देवताओंका कार्य सिद्ध हो गया, परंतु भविष्यके कार्यको परिलक्ष्यकर ब्रह्माजी बोले—देवताओ! अनुपम अंगोंसे शोभा पानेवाली ये देवी अब हिमालय पर्वतपर पधारें और आपलोग भी अब तुरंत वहाँ चलकर आनन्दसे रहें। नवमी तिथिके दिन इन देवीकी सदा स्थिरचित्त एवं ध्यान-समाधिद्वारा आराधना करनी चाहिये। ऐसा करनेसे ये सम्पूर्ण प्राणियोंको वर देंगी, इसमें लेशमात्र संदेह नहीं। इस (नवमी) तिथिको जो पुरुष अथवा स्त्री पक्वान्न प्रसादरूपसे भोजन करेंगे, उनके सभी मनोरथ सिद्ध हो जायँगे।

तत्पश्चात् उन्होंने पुनः देवीसे कहा—‘देवि! आपके द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ। किंतु अभी हमारा एक दूसरा बहुत बड़ा कार्य शेष है। वह यह कि आगे महिषासुर नामका एक राक्षस उत्पन्न होगा, जिसका विनाश भी आपके ही द्वारा सम्भव है।’

राजन्! इस प्रकार कहकर ब्रह्माजी तथा सम्पूर्ण देवता देवीको हिमालय पर्वतपर प्रतिष्ठितकर यथास्थान प्रस्थित हो गये। हिमवान् पर्वतपर आनन्दसे विराजनेके कारण उनका नाम 'नन्दादेवी' हुआ।

डॉ० राजबली पाण्डेयके अनुसार हिमालयमें गढ़वाल जिलेके बधा परगनेसे ईशानकोणकी ओर ‘नन्दादेवी’ पर्वत शिखर है। यह गौरीशंकरके बाद विश्वका सर्वोच्च शिखर है। नन्दा देवी इसमें विराजती हैं। भाद्र शुक्ल सप्तमीको प्रति बारहवें वर्ष यहाँकी यात्रा होती है। इसका आयोजन गढ़वालका राजकुटुम्ब करता रहा है। नन्दगृहमें उत्पन्न हुई नन्दादेवीने असुरोंको मारकर जिस कुण्डमें स्नान कर सौम्यरूपता पायी थी, वह यहाँ रूपकुण्ड कहलाता है।

‘ॐ नन्दायै नमः’ भगवती नन्दादेवीका मन्त्र है।

( श्रीचारुचन्द्र शीलजी )

छोटी-सी सुनसान गली थी। निश्चित स्थानपर वह स्त्री खड़ी थी। रामतनु उसके पाससे निकले कि उसने बड़े जोरोंसे चिल्लाकर पुकारा—‘छोड़ दे, छोड़ दे—बदमाश कहींका—हाय! हाय! तू ब्राह्मण मास्टर होकर मेरा शील लूटना चाहता है। अरे कोई बचाओ।’ रामतनु तो हक्के-बक्के रह गये। वह रामतनुके बिलकुल समीप आ गयी थी। कपड़े अस्त-व्यस्त कर रखे थे उसने। अधरचन्द्र तो गुंडोंको लिये छिपा खड़ा ही था। तुरंत आकर हल्ला मचाने तथा रामतनुको गालियाँ बकते हुए उन्हें मारने लगा। गुंडे भी प्रहार करने लगे। रामतनुकी तो कुछ समझमें ही नहीं आया कि यह सब क्या और क्यों हो रहा है। हल्ला सुनकर आस-पासके घरोंमेंसे लोग निकल आये। खासी भीड़ इकट्ठी हो गयी। गाँवके लोग तो रामतनुके स्वभावसे परिचित और उनके प्रति अत्यन्त सहानुभूति तथा श्रद्धा रखते थे। प्रायः सभी उनसे उपकृत हुए थे। रामतनुके उपकार तो अधरचन्द्रपर भी कम नहीं थे। पड़ोसीके नाते वह बीसों बार उनकी सहायता प्राप्त कर चुका था। एक बार तो अधरचन्द्रको प्लेग हो गया था। डबल गिल्टी थी। सारे गाँवमें प्लेग फैला था। घरवाले भी सब अधरचन्द्रको छोड़कर चले गये थे। उस समय एक रामतनु ही ऐसे थे, जो अपने पड़ोसी अधरकी सेवामें चौबीसों घंटे लगे रहे, दवा-दारू की और उसे बचाया। घरवाले तो दस दिनके बाद लौटे थे। पर कृतघ्न तथा दूसरेको दुःख देनेमें ही सुखका अनुभव करनेवाले अधरचन्द्रपर रामतनुके उपकारोंका कोई असर नहीं था। इसी दुष्ट स्वभाववश यह आज अपनी आसुरी क्रियामें लग रहा था। उसने तो हो-हल्ला इसलिये मचाया था—गाँववालोंको वह अपने पक्षमें कर ले। रामतनुके प्रति वे सब नाराज हो जायँ तथा गाँवभरमें रामतनुकी बदनामी हो जाय। पर भगवान् तो सब देखते ही हैं। वहाँ एकत्र हुए गाँववालोंमें एकाधको छोड़कर प्रायः सभी रामतनुको सच्चा सत्पुरुष तथा निर्दोष मानते

एक समय छुट्टियोंमें रामतनु गाँवपर आये हुए थे। अधरचन्द्रने दो-तीन गुंडोंको पहलेसे ही तैयार करके एक दुष्ट-योजना बना रखी थी। बाहरसे किसी एक दुश्चरित्रा स्त्रीको वहाँ बुला लिया था। योजना थी कि किसी दिन वह स्त्री व्यर्थ ही हो-हल्ला मचाये, रामतनुपर लांछन लगाये और उसी समय वे गुंडे तथा अधरचन्द्र उस स्त्रीकी रक्षाके बहाने रामतनुपर टूट पड़ें। योजनाके अनुसार ही काम हुआ। एक दिन रामतनु कहीं बाहरसे घर आ रहे थे। दोपहरका समय था। एक

वे गाँववालोंसे बोले—‘देखिये, मनुष्य अपने-अपने स्वभावके अनुसार बर्ताव व्यवहार करता है। परंतु दुःख तो सभीको होता है। आज मेरे कारणसे अधरचन्द्र तथा उनके परिवारको कितनी पीड़ा हो रही है। सचमुच उनकी इस पीड़ामें मैं ही कारण हूँ। किसी भी हेतुसे हो, अधरबाबू मेरे कारणसे दुखी थे, और उस दुःखने ही उनसे ऐसा व्यवहार करवा दिया। वस्तुतः मुझपर जो मार पड़ी, वह तो मेरे अपने ही पूर्वकृत कर्मका फल है। मेरा प्रारब्ध ऐसा न होता तो अधरचन्द्रमें क्या शक्ति थी कि वे मुझको कष्ट पहुँचा सकते। यह तो मेरे ही कर्मका फल मुझे मिला। वे भूलसे इसमें निमित्त बनकर अपना बुरा कर बैठे, यह उनकी भूल है। भूला हुआ आदमी









ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सौरादि पाँचों अंगोंमें केवल दो—सौर एवं चान्द्र संवत्सरोंका ही प्रयोग व्यवहार-जगत्में चल रहा है। वर्तमान पंचांगोंमें वर्षके राजा, मन्त्री, धान्येश आदि लिखे जाते हैं। संहिता ग्रन्थोंमें लिखा गया है कि जिस दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा हो, वह जिस दिन हो वही राजा तथा मेष संक्रान्तिके दिनका स्वामी वर्षका मन्त्री होगा।

नवसंवत्सर महाराज विक्रमादित्यकी गौरवमयी कीर्तिगाथा गा रहा है। युधिष्ठिरका सिंहासनारोहण, सत्ययुगका प्रारम्भ, मत्स्यावतार इसी तिथिको हुआ था। पुराणोंके अनुसार, ब्रह्माजीने जगत्की सर्जना इसी तिथिसे आरम्भ की थी। ऋषियोंने कालमानोंको प्रकृतिके आधारपर निर्धारित किया है। प्रकृतिको देखकर संवत्सरके आनेका बोध हो जाता है।

## संवत्सर-पूजन

चैत्रमासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदा तिथिसे नवसंवत्सरका आरम्भ होता है, यह अत्यन्त पवित्र तिथि है। इसी तिथिसे पितामह ब्रह्माने सृष्टिनिर्माण प्रारम्भ किया था—

या केसरसे रंगे अक्षतसे अष्टदलकमल बनाकर उसपर ब्रह्माजीकी सुवर्णमूर्ति स्थापित करे। गणेशाम्बिका-पूजनके पश्चात् 'ॐ ब्रह्मणे नमः' मन्त्रसे ब्रह्माजीका आवहनादि षोडशोपचार पूजन करे।

चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि ।

पूजनके अनन्तर विघ्नोंके नाश और वर्षके कल्याणकारक तथा शुभ होनेके लिये ब्रह्माजीसे निम्न प्रार्थना की जाती है—

शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति ॥

इस तिथिको रेवती नक्षत्रमें, विष्णुम्भ योगमें दिनके समय भगवान्‌के आदि अवतार मत्स्यरूपका प्रादुर्भाव भी माना जाता है—

भगवंस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे ।

कृते च प्रभवे चैत्रे प्रतिपच्छुक्लपक्षगा ।

संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः ॥

रेवत्यां योगविष्कुम्भे दिवा द्वादशनाडिकाः ॥

पूजनके पश्चात् विविध प्रकारके उत्तम और सात्त्विक पदार्थोंसे ब्राह्मणोंको भोजन करानेके बाद ही स्वयं भोजन करना चाहिये।

मत्स्यरूपकुमार्या च अवतीर्णो हरिः स्वयम् ।

(स्मृतिकौस्तुभ)

युगोंमें प्रथम सत्ययुगका प्रारम्भ भी इस तिथिको हुआ था। यह तिथि ऐतिहासिक महत्त्वकी भी है, इसी दिन सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यने शकोंपर विजय प्राप्त की थी और उसे चिरस्थायी बनानेके लिये विक्रम-संवत्का प्रारम्भ किया था।

इस दिन पंचांग-श्रवण किया जाता है। नवीन पंचांगसे उस वर्षके राजा, मन्त्री, सेनाध्यक्ष आदिका तथा वर्षका फल श्रवण करना चाहिये। सामर्थ्यानुसार पंचांग-दान करना चाहिये तथा प्याऊ (पौसला)-की स्थापना करनी चाहिये। आजके दिन नया वस्त्र धारण करना चाहिये तथा घरको ध्वज, पताका, बन्दनवार आदिसे सजाना चाहिये। आजके दिन निम्बके कोमल पत्तों, पुष्पोंका चूर्ण बनाकर उसमें काली मिर्च, नमक, हींग, जीरा, मिर्ची और अजवाइन डालकर खाना चाहिये, इससे रुधिर-विकार नहीं होता और आरोग्यकी प्राप्ति होती है। इस दिन नवरात्रके लिये घट-स्थापन और तिलकव्रत भी किया जाता है। इस व्रतमें यथासम्भव नदी, सरोवर अथवा घरपर स्नान करके संवत्सरकी मूर्ति बनाकर उसका 'चैत्राय नमः', 'वसन्ताय नमः' आदि नाम-मन्त्रोंसे पूजन करना चाहिये। इसके बाद विद्वान् ब्राह्मणका पूजन-अर्चन करना चाहिये।

इस दिन प्रातः नित्यकर्म करके तेलका उबटन लगाकर स्नान आदिसे शुद्ध एवं पवित्र होकर हाथमें गन्ध, अक्षत, पुष्प और जल लेकर देश-कालके उच्चारणके साथ निम्नलिखित संकल्प करना चाहिये—

‘मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य स्वजनपरिजन-  
सहितस्य वा आयुरारोग्यैश्वर्यादिसकलशुभ-  
फलोत्तरोत्तराभिवृद्ध्यर्थं ब्रह्मादिसंवत्सरदेवतानां  
पूजनमहं करिष्ये।’

—ऐसा संकल्पकर नयी बनी हुई चौरस चौकी या बालुकी वेदीपर स्वच्छ श्वेतवस्त्र बिछाकर उसपर हल्दी

## 'नामु राम को कलपतरु'

(श्रीगजाननजी पाण्डेय)

एक बहुत लोकप्रिय भजन है—'जय जय राम, जय सियाराम, दो अक्षरका प्यारा नाम, राम नामके जपनेसे ही बन जाते सब बिगड़े काम।'

कितनी सीधी एवं सच्ची बात इस भजनमें आयी है कि यदि हमें इस भवसागरसे पार उतरना है तो 'राम' के नामको दृढ़तासे अपने जीवनका आधार बना लेना होगा। तुलसीदासजी अपना उदाहरण देते हुए, 'राम' का नाम लेनेसे 'कल्याण' की बात कहते हैं।

नामु राम को कलपतरु कलि कल्याण निवास।

जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदास॥

(रा०च०मा० १।२६)

अर्थात् कलियुगमें रामका नाम कल्पतरु (मनचाहा पदार्थ देनेवाला) और कल्याणका निवास (मुक्तिका घर) है, जिसको स्मरण करनेसे भाँग-सा (निकृष्ट) तुलसीदास तुलसीके समान पवित्र हो गया।

अमूल्य मानव जीवनकी सार्थकता इसमें है कि हम सत्कर्मद्वारा सर्वोच्च लक्ष्य अर्थात् ईश्वरप्राप्तिको अपने जीवनका लक्ष्य बनायें, अन्यथा यदि तुच्छ बातोंमें, भौतिक सुख-सुविधाओंके जालमें फँसकर, यदि हमने इस जीवनको यूँ ही गवाँ दिया तो हमारे हाथ क्या लगेगा ?

इस दोहेमें इस ओर संकेत किया गया है—

हरि माया कृत दोष गुन बिनु हरि भजन न जाहिं।

भजिअ राम तजि काम सब अस बिचारि मन माहिं॥

(रा०च०मा० ७।१०४क)

श्रीहरिकी मायाके द्वारा रचे हुए दोष और गुण श्रीहरिके भजन बिना नहीं जाते। मनमें ऐसा विचारकर, सब कामनाओंको छोड़कर (निष्काम भावसे) श्रीरामजीका भजन करना चाहिये।

दुर्मार्गसे कमाई हुई रकम, सन्तोष नहीं देती और न धनसे सुख खरीदा जा सकता है, इसलिये कहा गया

है कि 'सन्तोषरूपी धनके आगे, सभी प्रकारके धन व्यर्थ हैं।' यदि सारी सुख-सुविधाएँ होनेके बावजूद मनमें शान्ति नहीं है तो वह दौलत किस कामकी ?

अतः हमें अच्छे दिनोंमें भी ईश्वरको नहीं भूलना चाहिये, ताकि दुःख ही क्यों हो ?

दुःख में सुमिरन सब करे सुख में करे न कोय।

जो सुख में सुमिरन करे तो दुःख काहे को होय॥

(कबीरदास)

अतः मनमें ईश्वरके प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास हो और सत्कर्मका साथ हो तो कोई बाधा हमारा मार्ग नहीं रोक पायेगी। इसलिये तुलसीदासजी इस जीवके उद्धारके लिये संजीवनी मन्त्र बता रहे हैं कि—

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार।

तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर॥

(रा०च०मा० १।२१)

अर्थात् यदि तू भीतर और बाहर दोनों ओर उजाला चाहता है तो मुखरूपी द्वारकी जीभरूपी देहलीपर रामनामरूपी मणि-दीपकको रख।

भारत संतोंकी भूमि है। यहाँ अनेक महापुरुषोंने जन्म लिया है। उनका जीवन हमारे लिये प्रकाश-स्तम्भके समान है।

गीताका सार यही है कि 'जो भी होता है, हमारे अच्छेके लिये होता है।' इसपर हमारी आस्था बनी रहे अर्थात् हम जैसे भी हैं, सूत्र (डोरी) उस ईश्वरके हाथमें दे दें तो वह हमें उबार लेगा।

अतः हमें अपने धर्मका पालन करते हुए, बुराईसे दूर रहना है। राम भजनमें, आलस्यका परित्याग करना है और उसकी शरणमें जाकर ही इस जीवको मुक्ति मिल सकती है। तब ईश्वरके रूपमें हमारा पथ-प्रदर्शन करते हुए, इस जीवनको निष्कण्टक बनायेंगे, इसमें तनिक सन्देह नहीं है।

( श्रीकौशलजी पाण्डेय )

माघमासके शुक्लपक्षकी प्रथम नौ तिथियाँ गुप्त नवरात्र कही जाती हैं।

एक वर्षमें कुल चार नवरात्र होते हैं, जिनमेंसे सामान्यतः दो नवरात्रियोंके बारेमें सबको पता रहता है, पर शेष दो गुप्त नवरात्र हैं।

माँ दुर्गाकी आराधना वैसे तो प्रत्येक दिन की जानी चाहिये, लेकिन नवरात्रमें देवीकी पूजा का विशेष महत्त्व है। चैत्र और आश्विनमासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे नवमीतक नौ दिनोंमें देवीके नौ रूपोंकी आराधनाका विधान है। इन नवरात्रोंको वासन्तिक नवरात्र और शारदीय नवरात्रके रूपमें जाना जाता है।

इनके अलावा भी सालमें दो नवरात्र ऐसे आते हैं, जिनमें माँ दुर्गाकी दस महाविद्याओंकी पूजा-अर्चना की जाती है। तंत्र-विद्यामें आस्था रखनेवाले लोगोंके लिये यह नवरात्र बहुत महत्त्व रखते हैं।

इन नवरात्रको गुप्त नवरात्र कहा जाता है, आषाढ़ और माघमासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे नवमीतक नवरात्रको गुप्त नवरात्र कहा जाता है। गुप्त नवरात्रका समय शाक्त एवं शैव-धर्मावलंबियोंके लिये तन्त्र साधनाओंके लिये अधिक शुभ होता है। तन्त्र-साधकोंके लिये यह समय महत्त्वपूर्ण है, इन दिनों दस महाविद्याकी साधना कल्याणकारी सिद्ध होगी। जो मुक्तिका मार्ग बताती है, उसे 'विद्या' कहते हैं और जो भोग और मोक्ष दोनों देती है; उसे महाविद्या कहते हैं। दस महाविद्या इस प्रकार हैं—इन महाविद्याओंके प्रकट होनेकी कथा महाभागवत-देवीपुराणमें वर्णित है। इनका नाम तथा कपाफल कुछ ऐसा है—

१-काली—दस महाविद्याओं में यह प्रथम है।  
कलियुगमें इनकी पूजा-अर्चनासे शीघ्र फल मिलता है।

२-तारा—सर्वदा मोक्ष देनेवाली और तारनेवालीको  
Hinduism Discord Server <https://discord.gg/d>

माँ ताराकी पूजा की थी। आर्थिक उन्नति और बाधाओंके निवारणहेतु माँ तारा महाविद्याका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसकी सिद्धिसे साधककी आयके नित्य नये साधन बनते हैं। जीवन ऐश्वर्यशाली बनता है। इसकी पूजा गुरुवारसे आरम्भ करनी चाहिये। इससे शत्रुनाश, वाणी-दोष-निवारण और मोक्षकी प्राप्ति होती है।

**३-छिन्नमस्ता**—माँ छिन्नमस्ताका स्वरूप गोपनीय है। इनका सर कटा हुआ है। इनके कबन्धसे रक्तकी तीन धाराएँ निकल रही हैं। जिसमें—से दो धाराएँ उनकी सहेलियाँ और एक धारा स्वयं देवी पान कर रही हैं। चतुर्थ संध्याकालमें छिन्नमस्ताकी उपासनासे साधकको सरस्वतीकी सिद्धि हो जाती है। राहु इस महाविद्याका अधिष्ठाता ग्रह है।

**४-त्रिपुरभैरवी**—आगम ग्रन्थोंके अनुसार त्रिपुरभैरवी एकाक्षररूप हैं। शत्रु-संहार एवं तीव्र तन्त्र-बाधा-निवारणके लिये भगवती त्रिपुरभैरवी महाविद्या-साधना बहुत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। इससे साधकके सौन्दर्यमें निखार आ जाता है। इसका रंग लाल है और यह लाल रंगके वस्त्र पहनती हैं। गलेमें मुण्डमाला है तथा कमलासनपर विराजमान है। त्रिपुरभैरवीका मुख्य लाभ बहुत कठोर साधनासे मिलता है।

**५-धूमावती**—धूमावतीका कोई स्वामी नहीं है। इसकी उपासनासे विपत्तिनाश, रोग-निवारण तथा युद्धमें विजयकी प्राप्ति होती है।

**६-बगलामुखी**—बगलामुखी शत्रु-बाधाको पूर्णतः समाप्त करनेके लिये बहुत महत्त्वपूर्ण साधना है। इस विद्याके द्वारा दैवी प्रकोपकी शान्ति, धन-धान्य-प्राप्ति, भोग और मोक्ष दोनोंकी सिद्धि होती है। इसके तीन प्रमुख उपासक ब्रह्मा, विष्णु एवं भगवान् परशुराम रहे हैं। परशुरामजीने यह विद्या द्रोणाचार्यजीको दी थी।



गुप्त नवरात्रके दौरान कई साधक महाविद्या (तन्त्र-साधना)-के लिये माँ काली, तारादेवी, त्रिपुरसुन्दरी, भुवनेश्वरी, माता छिन्नमस्ता, त्रिपुरभैरवी, माँ धूमावती, माता बगलामुखी, मातांगी और कमलादेवीकी पूजा करते हैं।

## भागवतकी आत्मा—चतुःश्लोकी

( डॉ० श्रीयुत श्रीभागवतशरणजी मिश्रा )

बदरीनाथ धामके समीप माणा गाँवमें स्थित व्यास गुफामें महर्षि वेदव्यास वेदोंका विभाजन, पुराणोंका प्रणयन और पंचम वेदके नामसे विख्यात महाभारतकी रचना करनेके पश्चात् उदास बैठे थे। तभी वहाँ श्रीनारदजी पहुँचे और



उन्होंने उनसे उदासीका कारण पूछा।

वेदव्यासजीने कहा कि इतने ग्रन्थोंका निर्माण करनेके बाद भी मुझे शान्ति नहीं मिल रही है।

नारदजीने कहा—‘महर्षे! यहाँ आपसे थोड़ी भूल हुई, आपने पुराणोंमें ज्ञानयोग समझाया, कर्मयोग समझाया। कहीं-कहीं ज्ञानको बहुत महत्त्व दिया है, परंतु ज्ञान और कर्म दोनों श्रीकृष्ण-प्रेमसे सफल होते हैं। आपने प्रेममें पागल होकर विस्तारपूर्वक श्रीकृष्णकी लीला-कथा नहीं कही, इसलिये आपका मन अशान्त है।’

व्यासजीने मार्गदर्शन करनेका अनुरोध किया। तब नारदजीने बताया—क्षीरसागरमें शेषनागकी शय्यापर लेटे हुए भगवान् विष्णुके नाभिकमलसे उत्पन्न ब्रह्माजीको विष्णुजीने सृष्टि करनेका आदेश दिया तथा अपने ऐश्वर्य एवं विस्तारके बारेमें बताया—

१-सृष्टिके पूर्व, मध्य तथा अन्तमें मैं ही रहता हूँ।

२-सृष्टिके बाद निर्मित सभी वस्तुएँ केवल मेरी माया होंगी।

३-सृष्टिमें निर्मित सभी वस्तुओंमें मैं उपस्थित रहूँगा, पर दिखायी नहीं दूँगा।

४-उपर्युक्त बातोंके सच्चे विश्लेषणसे ही शुद्ध ज्ञानकी प्राप्ति होगी।

यह प्रकरण तथा सभी बातें मेरे पिता श्रीब्रह्माजीने स्वयं बतायीं। इसलिये इन्हें ध्यानमें रखकर सरल भाषामें ईश्वरके ऐश्वर्य तथा विस्तारके बारेमें आप एक और पुराणका निर्माण करें, जिससे सभी लोग लाभान्वित हों।

इसीके पश्चात् व्यासजीने श्रीमद्भागवत-महापुराणकी रचना प्रारम्भ की और दूसरे स्कन्धके नौवें अध्यायमें इस प्रकरणका उल्लेख किया, इन्हीं चार श्लोकोंको चतुःश्लोकी भागवत कहा जाता है।

इन चार श्लोकोंका ही विस्तार पूरा पुराण है, जिसे बहुत ही रोचक ढंगसे व्यासजीने वर्णन किया है।

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत्परम्।

पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम्॥

ऋतेऽर्थं यत् प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि।

तद् विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः॥

यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु।

प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम्॥

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः।

अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा॥

( श्रीमद्भा० २।१।३२—३५ )

इसे भागवतका अमृत तथा भागवतकी आत्मा भी कहा जाता है।

**पहले श्लोककी व्याख्या**—सृष्टिके पूर्व केवल मैं था। सारे सूक्ष्म तथा स्थूल तथा इनका कारण अज्ञान भी मैं ही हूँ। जहाँ सृष्टि नहीं है, वहाँ भी मैं हूँ। सृष्टिके रूपमें जो कुछ प्रतीत होता है, वह भी मैं ही हूँ। सृष्टिके बाद जो बचा रहेगा, वह भी मैं ही हूँ।

इन विचारोंको जनमानसमें स्थापित करनेके लिये अनेक कथाएँ भागवत-पुराणमें व्यासजीने लिखी हैं। कुछ उद्धरण तथा उदाहरण निम्न हैं—१-भगवान्के दस अवतारोंकी कथाएँ, २-द्रौपदीके चीर-हरणकी कथा, ३-गज-ग्राहकी कथा, ४-रासलीलाकी कथा, ५-नृसिंह-



## उपनिषदोंमें प्रणव-निरूपण

( डॉ० श्रीइन्द्रमोहनजी झा 'सच्चन' )

प्रणव या 'ॐ' के जपयोगकी साधनाका विवेचन प्रायः सभी उपनिषदों एवं अन्य आध्यात्मिक योग-साधनात्मक ग्रन्थोंमें किया गया है। मुण्डकोपनिषद् (२।२।४)-में कहा गया है कि—

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।

अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत्॥

अर्थात् 'प्रणव धनुष है, आत्मा तीर है, ब्रह्म उसका लक्ष्य है। इसे प्रमादरहित होकर, तीरकी भाँति तन्मय होकर बीधना चाहिये।' श्वेताश्वतरोपनिषद् (१।१४)-के शब्दोंमें साधक अपने शरीरको एक लकड़ी बनाये और प्रणवको दूसरी लकड़ी। ध्यानरूपी रगड़के अभ्याससे छिपी हुई आगके सदृश परमात्मदेवको देखे—

स्वदेहमरणिं कृत्वा प्रणवं चोत्तरारणिम्।

ध्याननिर्मथनाभ्यासाद् देवं पश्येन्निगूढवत्॥

छान्दोग्योपनिषद्में ओंकारकी स्तुतिसे अमर होनेका संकेत देते हुए कहा गया है—

'यदा वा ऋचमाप्नोत्योमित्येवातिस्वरत्येवः सामैवं यजुरेष उ स्वरो यदेतदक्षरमेतदमृतमभयं तत्प्रविश्य देवा अमृता अभया अभवन्।' (१।४।४)

अर्थात् जब उपासक ऋग्वेदको पढ़ता है, तो ऊँचे स्वरमें ओम् बोलता है। इसी प्रकार सामवेद और यजुर्वेदको भी पढ़ता है। यही ओम् शब्द स्वर है। यह अक्षर, अमृत और अभय है। जो उपासक ऐसा जानकर ॐ की स्तुति करता है, वह उस स्वरमें प्रवेश करता है। जैसे देव उसमें प्रवेश करके अमर हो गये हैं, वैसे ही वह भी अमर हो जाता है।

'तैत्तिरीय शीक्षावल्ली' के अष्टम अनुवाकमें ओंकारको ब्रह्मप्राप्तिका साधन बताते हुए कहा गया है—

ओमिति ब्रह्म। ओमितीदं सर्वम्। ओमित्येतदनुकृतिर्ह स्म वा अप्यो श्रावयेत्याश्रावयन्ति। ओमिति सामानि गायन्ति। ओःशोमिति शस्त्राणि शःसन्ति। ओमित्यध्वर्युः प्रतिगरं प्रतिगृणाति। ओमिति ब्रह्मा प्रसौति। ओमित्यग्नि-होत्रमनुजानाति। ओमिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मोपाज्वा-  
नान्ति। ब्रह्मोपाज्वा-

ओम् यह ब्रह्म है। ओम् यह सब कुछ है। ओम् अंगीकारका वाचक है। ओम् कहनेपर [ऋत्विज] मन्त्र सुनाते हैं। ओम् शोम् कहकर शस्त्रों (ऋग्वेदके प्रार्थना-मन्त्रविशेष)—का पाठ करते हैं। ओम् कहकर (सोमयागमें) अध्वर्यु और यजुर्वेदी प्रतिगर (प्रोत्साहक मन्त्रविशेष) पढ़ता है। ओम् कहकर ब्रह्माको अनुज्ञा देता है। ओम् कहकर अग्निहोत्रकी अनुज्ञा देता है।

वेदाध्ययन करनेवाला ब्राह्मण ओम् उच्चारण करता हुआ कहता है—'मैं ब्रह्मको प्राप्त होऊँ और इस प्रकार वह ब्रह्मको अवश्य पा लेता है।'

ध्यानबिन्दूपनिषद् (१।१७)-के अनुसार प्रणवके एक मात्राके जपको अन्तरायरूप पापोंका नाशक, दो मात्राओंके दीर्घ जपको ऋद्धि-सिद्धियोंका प्रदायक तथा प्लुप्त जपको मोक्षका प्रदायक माना है। यथा—

ह्रस्वो दहति पापानि दीर्घः संपत्प्रदोऽव्ययः।

अर्धमात्रासमायुक्तः प्रणवो मोक्षदायकः॥

इनके उच्चारणके तीन प्रकार हैं—

'ओमोमोम्' इस प्रकार निरन्तर उच्चारणको ह्रस्व कहा गया है। ओम् ओम् ओम् इस प्रकार स्फुट उच्चारणको दीर्घ कहा जाता है। ओ३म् ओ३म् ओ३म् इस प्रकार 'ओ' का हृदयसे विशुद्धिचक्रतक उकारकी ध्वनि व्याप्त होकर विष्णु-ग्रन्थिका भेदन होता है। मकारकी ध्वनि कण्ठदेशसे आज्ञाचक्रतक व्याप्त होकर ब्रह्मग्रन्थिका भेदन होता है। इसके पश्चात् जिसे तुरीया मात्रा अथवा अर्धमात्रा कहा गया है, उसकी सूक्ष्म ध्वनियोंसे आत्मसाक्षात्कारकी अवस्था आती है। योगतत्त्वोपनिषद् (१३८-१३९)-में कहा गया है—

अकारे रेचितं पद्ममुकारेणैव भिद्यते॥

मकारे लभते नादमर्धमात्रा तु निश्चला।

अकारसे स्फुट होनेवाले हृत्पद्मका उकारसे भेदन होता है। मकारसे नादसिद्धि प्राप्त होती है और अर्धमात्रासे निश्चलावस्था प्राप्त होती है। प्रणवकी इस अवस्था का संकेत यह है—





# सरल जीवन ही सच्चा ज्ञान है

( श्रीदिलीपजी देवानी )

ऐसा लगता है कि बड़ी-बड़ी ज्ञानकी बातोंमें उलझकर मनुष्य सहज और सरल जीवनको खो बैठता है। जैसे संसारकी उलझन है, वैसे ही यह भी है। सरलता और सच्चाईसे जीवन बिताना ही तो ज्ञान है। बहुत-से दृष्टान्त याद कर लेना, बहुत-से भजन याद कर लेना, यह तो दिमागपर बहुत बड़ा वजन लादना हुआ। जिन्हें प्रवचन करना हो उनके लिये यह बात है। अपनी मुक्तिके लिये बहुत-से शास्त्र पढ़नेकी जरूरत नहीं, गीताके किसी एक श्लोकको ही जीवनमें उतार लेनेसे ही काम बन जाता है। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि जो पाँच परखे हुए विचारोंको आत्मसात् करके अपना जीवन गठन करता है, वह उस व्यक्तिसे श्रेष्ठ है, जिसने पूरा ग्रन्थालय कण्ठस्थ कर लिया है। मैं अपने गुरुसे कहता था कि मुझे यह ग्रन्थ पढ़ना है, वह ग्रन्थ पढ़ना है, तब वे कहते थे कि 'बेटा! पूरा समुद्र तू थोड़े पी सकेगा। सच्चाईसे जीवन बिता, भगवान्का नाम ले, सबके प्रति सद्भावना रख और अपने धर्मका पालन कर। बस, इतनेसे ही तू भवसागर पार हो जायगा।'।

एक व्यक्ति स्वामी विलासानन्दजीके पास आया और बोला कि स्वामीजी! एक पुस्तक लिखना चाहता हूँ, तब स्वामीजी बोले पहलेसे क्या कम पुस्तकें हैं, जो तुम और बड़ो बड़ाना चाहते हो। गीता है, रामायण है, वेद हैं, पुराण हैं—इनमेंसे कोई एक ही पढ़ लो तो कल्याण हो जाय।

शास्त्र पढ़नेसे हमारा कोई विरोध नहीं, परंतु इसकी अत्यधिक वासना थका देती है। श्रीउड़िया बाबाजी महाराज कहते थे कि 'शास्त्रोंके जंगलमें मत भटको।' कभी-कभी बहुत बड़ी-बड़ी ज्ञानकी बातोंमें उलझ जानेके कारण हम यह भूल जाते हैं कि हमारे लिये कौन-सी एक-दो बातें हैं, जो हम जीवनमें उतारकर अपना कल्याण कर सकें।

कठोपनिषद्में यह आया है कि—

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो

न मेधया न बहुना श्रुतेन।

यमेवैष वृणुते तेन लभ्य-

स्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुःस्वाम्॥

यह आत्मा केवल प्रवचनसे नहीं मिलता, न मेधासे और न बहुत सुननेसे, बल्कि यह जिसका वरण करता है, उसके आगे अपना रहस्य प्रकट कर देता है।

शंकराचार्य भगवान्ने इसका भाष्य लिखते हुए यह कहा है कि केवल आत्मलाभके लिये प्रार्थना करनेवालेका ही यह आत्मा वरण करता है।

कबीर, सूर, नानक, मीरा, रैदास आदि संत ज्यादा पढ़े-लिखे न थे, परंतु ये सब भगवत्प्राप्त व्यक्ति थे। आज सारा संसार इनको श्रद्धासे सर झुकाता है।

भगवान् शंकराचार्य विवेकचूड़ामणि नामक ग्रन्थमें लिखते हैं—

वाग्वैखरी शब्दझरी शास्त्रव्याख्यानकौशलम्।

वैदुष्यं विदुषां तद्वद् भुक्तये न तु मुक्तये॥

वाणीका कौशल, शब्दोंका चमत्कार, शास्त्रकी व्याख्या करनेका कौशल—यह सब विद्वानोंका मनोरंजन है, इसका मोक्षसे सम्बन्ध नहीं है।

वाचिक ज्ञानी मत बनो, बातको सही समझो एवं अपने जीवनको श्रेष्ठ बनाओ। एक साधुकी डायरी देखी तो उसमें सिर्फ 'राम' नाम लिखा था, बाकी कुछ भी नहीं।

राजा पृथुने अन्तमें प्रजाजनोंको उपदेश देते हुए कहा कि अपने धर्मका पालन करो एवं भगवान्को याद करो। बस, इतनेसे ही कल्याण हो जायगा।

गीतामें भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं, अपने स्वाभाविक कर्मोंद्वारा भगवान्की पूजा करके मनुष्य परम सिद्धिको प्राप्त करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ईश्वरप्राप्तिको मार्ग बहुत ही सहज और सरल है, वह तो ज्ञानका अभिमान करनेवाले लोग बातको उलझा देते हैं और बड़े-बड़े व्याख्यानोंमें असल बात छोड़ बैठते हैं। गिद्ध उड़ता आकाशमें है, परंतु नजर मांसके टुकड़ेपर होती है, उसी प्रकार बात तो 'अहं ब्रह्मस्मि' की करते हैं, परंतु नजर कामिनी-कांचनपर रहती है। जीवनमें त्याग आना चाहिये, सच्चाई आनी चाहिये, सरलता आनी चाहिये।

यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥

सिर्फ इन दो पंक्तियोंका अर्थ हम समझ जायें तो पूरी गीता समझमें आ जायगी। प्रथम पंक्ति 'वैराग्य' और दूसरी पंक्ति 'ज्ञान' की है। जबकि शास्त्रोंमें 'ज्ञान' पहले आता है और 'वैराग्य' बादमें। लेकिन यहाँ ठीक उलटा है; क्योंकि भगवान् पहले हमें हमारी आत्माको संयम यानी वैराग्यद्वारा जगाये रखनेकी बात करते हैं कि औरोंकी देखा-देखी तुम भी मत सो जाना और उसके बाद मुनियोंके दृष्टान्तसे यह ज्ञान भी दे देते हैं कि जिस सांसारिकतामें दुनियावाले जगे हुए हैं, उसकी तरफसे अपनी आँखें बन्द रखो, वह तो वास्तवमें घोर रात्रि है। इस प्रकार गीताको शास्त्रीय ज्ञानकी आवश्यकता नहीं है। गीताको तो सिर्फ हमारा दृष्टिकोण सही करना है, जिससे 'आत्मा' हमारे 'ध्यान' में आ जाय। संसारको पूर्ण रूपसे (या आंशिक रूपसे ही) मिटा देना हम-जैसे क्षुद्रजीवके वशकी बात नहीं है। लेकिन गीता हमारे दृष्टिकोणको सही कर देती है। हमारे बुद्धिके टेलिस्कोपको घुमाकर उस कोणपर स्थिर कर देती है, जिसमें संसार तो बिलकुल मिट जाता है, लेकिन आत्मा 'फोकस' में आ जाती है।

अतः वह 'आत्मतत्त्व' जिसको आज हम भूल गये हैं, उसकी याद दिलाना ही गीताका मूल उद्देश्य है। गीता, यद्यपि ज्ञानका अथाह सागर है, लेकिन गीताका मूल उद्देश्य ज्ञान देना नहीं बल्कि अर्जुन ही नहीं, जन-जनको आत्माका प्रत्यक्ष अनुभव कराना है। इसीलिये भगवान् ने ज्ञान नहीं बल्कि 'ज्ञानयोग', कर्म नहीं बल्कि 'कर्मयोग' तथा ज्ञान और कर्म दोनोंकी पराकाष्ठा 'भक्तियोग' पर सबसे ज्यादा जोर दिया है।

ज्ञान और अज्ञान दोनोंसे मुक्त हुए बिना 'आत्मा' का दर्शन नहीं हो सकता, क्योंकि आत्मा सारे बन्धनोंसे मुक्त है। इसलिये शास्त्रोंका ज्ञान कितना भी हो जाय, उससे आत्माका ज्ञान कभी नहीं हो सकता, क्योंकि ब्रह्मके ज्ञानकी तुलनामें हमारा ज्ञान सदा अपूर्ण, नगण्य और तुच्छ ही नहीं बल्कि जड़ता है। अतः उसे तज देनेमें ही भलाई है। उससे चेतन आत्माका ज्ञान कभी नहीं हो सकता है। दूसरे यदि शास्त्रोंके ज्ञानसे ही

आत्माका ज्ञान होता हो तो मूर्खको तो कभी आत्माका ज्ञान नहीं होगा, जबकि आत्मा तो ज्ञानी और मूर्ख दोनोंमें है। ज्ञानी हो या मूर्ख, निर्बल हो या बलवान्, आस्तिक हो या नास्तिक गीता सबके लिये है। इसीलिये आत्मज्ञानकी दिशामें अग्रसर होनेमें भगवान्ने वेदोंके ज्ञानको भी बाधा बताया है—‘**त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।**’ यह वेदोंकी अवमानना नहीं है, बल्कि वेदोंकी सबसे बड़ी प्रशंसा है। यह इस बातका प्रमाण है कि वेदोंसे बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। यदि वेदोंसे बड़ा कोई ज्ञान-शास्त्र होता तो भगवान् उसी शास्त्रका नाम लेते, वेदोंका नाम नहीं लेते। क्योंकि भगवान्का तात्पर्य यहाँ ‘बड़े-से-बड़े ज्ञान’ से है। महान् ज्ञानके पर्याय चूँकि वेद हैं, इसलिये वेदोंका उदाहरण दिया है।

ज्ञानके काँटेसे अज्ञानके काँटे (यानि संशय) -को निकाल देनेके बाद ज्ञान और अज्ञान दोनों काँटोंको फेंक देना चाहिये। ज्ञानके काँटेको सहेजकर रख लेनेसे मन सदा असहज ही रहता है। अतः अपनी सहज अवस्था यानि आत्मस्वरूपकी प्राप्ति नहीं हो सकती।

स्वस्थ शरीर, सही सोच और निर्मल मनमें ही आत्माकी अनुभूति जागती है। अर्जुनका शरीर स्वस्थ था, मन निर्मल था, लेकिन सोच सही नहीं थी। उसके सोचको सही दिशामें ले जानेका उपक्रम ही गीता है, जो अर्जुन ही नहीं हर युगमें हर व्यक्तिकी सोच सही दिशामें ले जानेमें सक्षम है। इसीलिये गीता मनुष्यकी शाश्वत मित्र है।

हर नकारात्मक विचारको निरस्त करना और हर सकारात्मक विचारको प्रशस्त करना गीताका स्वाभाविक गुणधर्म है। गीताजीमें भगवान् स्वयं बैठकर ज्ञान दे रहे हैं। इसलिये गीतामें अनन्त ज्ञान है, जिसका कोई पार नहीं पा सकता। पिछले पाँच हजार वर्षोंमें अनेक सन्त और विद्वानोंने जीवनभर गीताजीका अध्ययन किया, लेकिन गीताके ज्ञानका अन्त नहीं पा सके। गीतारूपी नावमें बैठकर वे निस्सन्देह भवसागर तर गये, क्योंकि वह बुद्धि धन्य है, जो ईश्वरके ध्यानमें सतत लगी हुई है। भगवान् स्वयं ऐसे ज्ञानियोंको अपना ही स्वरूप

मनुष्यमात्रकी कामयाबीका रहस्य आत्मामें निहित है। यह रहस्य गीता हमें बतलाती है। लेकिन आज हम पुनः आत्माको बिलकुल भूल बैठे हैं। शरीरको ही सब कुछ समझे हुए हैं। विज्ञानने भोगोंके प्रचुर साधन सुलभ कर दिये हैं। लोगोंमें भोगोंको भोगनेकी होड़ मच गयी है। विज्ञानके विकासने आत्माके मार्गको अवरुद्ध कर दिया है। संसारमें अनात्मवाद बढ़ गया है। अनात्मवाद बढ़नेसे अनीश्वरवाद बढ़ गया है। अनीश्वरवादसे अनाचार बढ़ गया है। अनाचारसे एक ऐसी अपसंस्कृति आ गयी है, जिसमें कदाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार आदि सब जायज है। दिशाहीन युवापीढ़ीकी असीम ऊर्जाका कुछ निहित स्वार्थोंने गलत उपयोग करके उन्हें आतंकवादकी तरफ मोड़ दिया है। मनुष्य पशु बन गया है। ऐसा नहीं है कि पशुमें आत्मा नहीं रहती, आत्मा पशुकी भी होती है, लेकिन पशुको अपनी आत्माका पता तब चलता है, जब वह मर जाता है। तब उसके पास दूसरा जन्म लेनेके

सिवाय कोई चारा नहीं रहता है। लेकिन मनुष्यको अपनी आत्माका पता जीते जी भी लग सकता है। यदि जीते जी मनुष्यको अपनी आत्माका पता चल जाय तो मनुष्य मरता नहीं है सिर्फ शरीर छोड़ता है। शरीरमें रहते हुए प्राण छोड़नेको हम मरना कहते हैं, जिसमें मर्मान्तक पीड़ा होती है, क्योंकि मन शरीर छोड़ना नहीं चाहता, लेकिन आत्मामें रहकर शरीर छोड़नेको हम 'मुक्ति' का नाम देते हैं। मृत्यु नहीं कह सकते, क्योंकि फिर उसे दूसरा जन्म नहीं लेना पड़ता, लेकिन संसारके भोगोंमें मनुष्यको इतना रस मिलने लगा है कि उसके लिये वह कुछ भी करनेके लिये तैयार है, यहाँतक कि मरने-मारनेके लिये भी तैयार है। हमारा मन भोगोंमें इतना रम

गया है कि हमें आत्माकी बात ही नहीं सुहाती अतः गीताको पढ़नेकी कौन कहे, गीताके ऊपर नजर भी पड़ जाती है तो हम अपनी नजर फेर लेते हैं कि यह तो ज्ञानकी पुस्तक है, हमारे किस कामकी! लेकिन गीता कोरे ज्ञानकी पुस्तक नहीं, हमारी आत्माका विज्ञान है गीता इतनी निर्दोष है कि हमें आत्माका 'सत्य' सिर्फ दिखाती है, हमपर आरोपित बिलकुल भी नहीं करती। आत्मा अपदार्थ है, इसलिये दिख जाय यही पर्याप्त है, आरोपित करनेकी आवश्यकता ही नहीं पड़ती। तभी तो अन्तमें अर्जुनको कह दिया 'यथेच्छसि तथा कुरु'। आत्मतत्त्वकी खोज और उसे मनुष्यमात्रको दिखा देना—यह श्रीमद्भगवद्गीताकी कृपा है।

बोध-कथा—

## भगवद्गीताका अद्भुत माहात्म्य

नर्मदाके तटपर माहिष्मती नामकी एक नगरी है। वहाँ माधव नामके एक ब्राह्मण रहते थे। उन्होंने अपनी विद्याके प्रभावसे बड़ा धन कमाया और एक विशाल यज्ञका आयोजन किया। उस यज्ञमें बलि देनेके लिये एक बकरा मँगाया गया। जब उसके शरीरकी पूजा हो गयी, तब बकरेने हँसकर कहा—'ब्रह्मन्! इन यज्ञोंसे क्या लाभ है। इनका फल विनाशी तथा जन्म-मरणप्रद ही है। मैं भी पूर्वजन्ममें एक ब्राह्मण था। मैंने समस्त यज्ञोंका अनुष्ठान किया था और वेदविद्यामें बड़ा प्रवीण था। एक दिन मेरी स्त्रीने बाल-रोगकी शान्तिके लिये एक बकरेकी मुझसे बलि दिलायी। जब चण्डिकाके मन्दिरमें वह बकरा मारा जाने लगा, तब उसकी माताने मुझे शाप दिया—'ओ पापी! तू मेरे बच्चेका वध करना चाहता है, अतएव तू भी बकरेकी योनिमें जन्म लेगा।' ब्राह्मणो! तदनन्तर मैं भी मरकर बकरा हुआ। यद्यपि मैं पशु-योनिमें हूँ, तथापि मुझे पूर्वजन्मोंका स्मरण बना है। अतएव इन सभी वैतानिक क्रियाजालसे भगवदाराधन आदि शुद्ध कर्म ही अधिक दिव्य हैं। अध्यात्ममार्गपरायण होकर हिंसारहित पूजा, पाठ एवं गीतादि सच्छास्त्रोंका अनुशीलन ही संसृति-चक्रसे छूटनेकी एकमात्र औषध है। इस सम्बन्धमें मैं आपको एक और आदर्शकी बात बताता हूँ।

'एक बार सूर्यग्रहणके अवसरपर कुरुक्षेत्रके राजा चन्द्रशर्माने बड़ी श्रद्धाके साथ कालपुरुषका दान करनेकी तैयारी की। उन्होंने वेद-वेदान्तोंके पारगामी एक विद्वान् ब्राह्मणको बुलवाया और सपुरोहित स्नान करने चले। स्नानादिके उपरान्त यथोचित विधिसे उस ब्राह्मणको कालपुरुषका दान किया।'

'तब कालपुरुषका हृदय चीरकर उसमेंसे एक पापात्मा चाण्डाल और एक निन्दात्मा चाण्डाली निकली। चाण्डालोंकी यह जोड़ी आँखें लाल किये ब्राह्मणके शरीरमें ठठात् प्रवेश करने लगी। ब्राह्मणने मन-ही-मन गीताके नवम अध्यायका जप आरम्भ किया और राजा यह सब कौतुक चुपचाप देख रहा था। गीताके अक्षरोंसे समुद्भूत विष्णुदूतोंने चाण्डाल जोड़ीको ब्राह्मणके शरीरमें प्रवेश करते देख वे झट दौड़े और उनका उद्योग निष्फल कर दिया। इस घटनाको देख राजा चकित हो गया और उस ब्राह्मणसे इसका रहस्य पूछा। तब ब्राह्मणने सारी बात बतलायी। अब राजा उस ब्राह्मणका शिष्य हो गया और उससे उसने गीताका अध्ययन—अभ्यास किया।'

इस कथाको बकरेके मुँहसे सुनकर ब्राह्मण बड़ा प्रभावित हुआ और बकरेको मुक्तकर गीतापरायण हो गया।



( श्रीउदयजी ठाकुर )



प्राचीन मन्दिर धर्म, संस्कृति और आस्थाके प्रतीक होते हैं। ऐसा ही एक मन्दिर हिमाचल प्रदेशमें स्थित बज्रेश्वरीदेवीका है। सतयुगकी देवसृष्टि एवं मानवसृष्टि और जलप्लावनके बाद पृथ्वीके उद्गमका इतिहास भगवती बज्रेश्वरी माताके संग जुड़ा हुआ है। बज्रेश्वरीदेवीके मूल मन्दिरकी स्थापना किसने की? इस बारेमें कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है। पौराणिक आख्यान और जनश्रुतिके आधारपर मन्दिरके निर्माण-सम्बन्धी विभिन्न उल्लेख प्राप्त होते हैं। चीनी यात्री ह्वेनसांगने अपने यात्रा-विवरणमें बज्रेश्वरी देवीके बारेमें विस्तृत वर्णन किया है। कहते हैं, सर्वप्रथम महमूद गजनवीने १००९ ई०में मन्दिरमें धन-सम्पत्तिकी प्रचुरताकी खबर पाकर आक्रमण किया था। महमूद गजनवीके एक मन्त्री उतबीलेने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि इतनी धन-सम्पत्ति और हीरे-जवाहरात लूटकर ले जाये गये कि घोड़े और खच्चरतक कम पड़ गये। कहते हैं कि

दिल्लीके तोमर वंशके राजा महिपालको माता बज्रेश्वरीदेवीने स्वप्नमें दर्शन देकर राजाको विशाल सेनाके साथ महमूद गजनवीपर आक्रमण करनेको कहा था। फिर राजा महिपालने महमूद गजनवीपर आक्रमणकर उसे आत्मसमर्पणके लिये मजबूर कर दिया था।

पन्द्रहवीं शताब्दीमें कटोच वंशीय राजा संसारचन्दद्वारा बज्रेश्वरी मन्दिरका पुनः निर्माण किया गया था। ऐसा इतिहासकारोंका कथन है। १४२९-३० ई०में उनके पिता राजा कर्मचन्द और पितामह मेघचन्दद्वारा लिखे प्राचीन शिलालेख बज्रेश्वरी मन्दिर-परिसरमें प्राप्त हुए थे। शारदा और देवनागरी लिपिमें ये शिलालेख हैं। सन् १६११ ई०में यूरोपके एक यात्री विलियम फिंचने मन्दिर अवलोकनकर मन्दिरकी देवीका नाम 'जय दुर्गा' लिखा है। यूरोपीय यात्री थॉमस कोयर्ट १६१५ ई० में और १६६६ ई० में फ्रांसिसी यात्री थैबलोटने मन्दिर देखकर अपने लेखमें मन्दिरकी बनावटके बारेमें विशेष वर्णन



**संत-संस्मरण—**

## श्रीनारायणदासजी भक्तमाली 'मामाजी'

( परम श्रद्धेय श्रीराधेश्यामजी खेमका, पूर्वसम्पादक 'कल्याण' )



श्रीनारायणदासजी भक्तमालीका उपनाम था 'मामाजी'। उन्हें सभी लोग मामाजीके नामसे पुकारते और वे इस नामसे प्रसन्न होते। श्रीनारायणदासजीका यह आन्तरिक भाव था कि जगज्जननी भगवती श्रीसीताजी उनकी बहन हैं और वे उनके भाई हैं। भगवान् राम सबके पिता हैं, जगज्जननी सीता सम्पूर्ण जगत्की माता होनेके कारण सम्बन्धकी दृष्टिसे श्रीनारायणदासजी सम्पूर्ण जगत्के मामा हो गये। यह सोचकर उन्हें प्रसन्नता होती कि जगज्जननीका भाई होनेके नाते मैं सबका मामा हूँ। इस प्रकार वे 'मामाजी' के नामसे प्रसिद्ध हो गये।

वे बक्सर-निवासी थे। बक्सर महर्षि विश्वामित्रजीकी तपःस्थली थी। विश्वामित्रजी तथा उनके कुछ शिष्य सन्त वहाँ तपस्या करते और कुछ राक्षसगण यदा-कदा उसमें विघ्न डालते। विश्वामित्रजीके प्रयाससे भगवान् राम वहाँ पधारे और उन्होंने ताड़का राक्षसीका वध किया तथा राक्षसोंके आतंकसे उस भूमिको मुक्त किया। श्रीमामाजीने इसी स्थानको अपना साधना-स्थल बनाया। यहाँ एक भव्य मन्दिरका निर्माण किया गया, जिसमें जगज्जननी भगवती जानकी, जो इनकी बहन थीं, उन्हें तथा अपने जवाँई (बहनोई)

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामको स्थापित किया। इनके साथ ही उनके परिकर, भाइयों तथा श्रीहनुमान्जी महाराजके विग्रह स्थापित किये गये। यह भव्य आश्रमका रूप बन गया, जहाँ सत्संग और भण्डारे आदि चलते रहते तथा उत्सव-महोत्सव होते रहते।

वर्षमें एक बार विवाह-पंचमी (मार्गशीर्ष सुदी ५)-पर भगवान्‌का विवाह-महोत्सव बड़ी धूम-धामसे बृहत् रूपमें मनाया जाता। इस महोत्सवके उपलक्ष्यमें सात दिनतक किसी सन्त अथवा किसी विशिष्ट कथावाचककी कथा होती। सायंकाल रामलीला होती। रामलीला किसी मण्डलीके द्वारा नहीं होती, पूज्य मामाजी स्वयं पात्रोंका चयन करते, अपने भावोंके अनुसार उन्हें लीलाके लिये तैयार करते। लीलाका संचालन प्रायः मामाजी स्वयं करते। लीलाके बीचमें स्वरचित पदोंका गायन करते। मामाजीके मार्मिक पदोंको सुनकर तथा भावपूर्ण लीला देखकर दर्शक भाव-विभोर हो जाते। विवाह-पंचमीके एक दिन पूर्व फुलवारी-लीला होती। विवाहके दिन भगवान्‌की बारात बड़े धूम-धामसे निकलती, इसमें कई हजार व्यक्ति शामिल होते। विवाह-पंचमीके दिन पूरी रात्रिमें भगवान्‌ श्रीसीतारामका विवाह सम्पन्न होता। साथ-साथ पदोंका गायन होता, दूसरे दिन रामकलेवा तथा युगलसरकारकी विदाई (पहरावनी) होती। देशके विभिन्न भागोंसे सन्त-महात्मा तथा भक्तगण इसमें सम्मिलित होते। इस प्रकार विवाह-महोत्सव बड़े भावसे विशिष्ट रूपमें सम्पन्न होता।

पूज्य मामाजीमें एक विशेषता थी कि उन्हें भगवान्‌की लीलाओंका स्वाभाविक रूपमें चिन्तन होता था, जिन्हें वे भोजपुरी पदोंमें लिख लेते थे। वे पद बड़े सुन्दर और लालित्यपूर्ण होते थे। इस प्रकार कई हजार पदोंकी रचना पूज्य मामाजीकी लेखनीद्वारा स्वाभाविक रूपमें प्रसूत हुई। उन्होंने मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् रामका चरित्र, लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णका चरित्र, भक्तमालके आधारपर भक्तोंकी कथा तथा शिव-विवाह

(अब वो) दालके मगाल मोती लस मखिरयो ॥ बढ० ॥

छिपि गइले जटा गङ्गाधार मृगछाला ।

( अब तो ) मौर चमाचम पीताम्बर सखियो ॥ बहु० ॥

पूज्य मामाजीने लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णकी लीलाओंका भी पदोंमें वर्णन किया है। इसकी भी एक बानगी देखिये—

दूर दूर से क्यों मन मोहन अधिक अधिक तरसाते हो ।  
ज्यों ज्यों आऊँ निकट साँवरे पीछे हटते जाते हो ॥  
पहले तो सम्बन्ध बताकर बरबस खींच लिया मन को ।  
कथा ब्याज से बाध्य कर दिया सब विधि आत्म समर्पन को ॥  
मैं भी खिँचा हुआ-सा आया सुन सुन तेरे गुन गन को ।  
देख मुग्ध-सा फँसा फन्द, अब प्रकट किया छलियापन को ॥  
यह कैसा परिहास ? बुलाकर घर में नजर चुराते हो ।  
ज्यों ज्यों आऊँ निकट, साँवरे ! पीछे हटते जाते हो ॥

इस प्रकार भक्त-भगवन्त-गुण-कीर्तन पूज्य मामाजीके स्वभावमें था। वे चलते-फिरते, आते-जाते जब भी समय मिलता भगवत्सम्बन्धी पद-रचना करने लगते। इसके साथ ही प्राचीन भक्तोंकी महिमाका गुणगान वे अपने पदों एवं नाटकोंमें करते। इनके द्वारा गोस्वामी तुलसीदासजी, चैतन्य महाप्रभु, पीपाजी इत्यादि भक्तोंके चरित पुस्तक-रूपमें लिखे गये। इसके साथ ही मीराबाईका एक सम्पूर्ण पद्यमय चरित भी लिखा गया जो पूर्वमें गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित हुआ था। वे भक्तमालकी कथा बड़े चावसे करते थे। इन्होंने श्रीनाभादासजीकृत भक्तमालका प्रकाशन गीताप्रेसद्वारा करनेका प्रयास किया। इनकी प्रेरणाके

फलस्वरूप गीताप्रेसद्वारा श्रीप्रियादासकृत रसबोधिनीटीका एवं विस्तृत हिन्दी व्याख्यासहित सम्पूर्ण भक्तमाल प्रकाशित हुआ। इसमें भक्तोंकी अतिशय महिमाका वर्णन है।

पूज्य मामाजीके इष्टदेव थे आनन्दकन्द ब्रह्माण्डनायक मर्यादापुरुषोत्तम ‘श्रीसीताराम’। अतः इनकी लीलाओंका चिन्तन मामाजीको प्रायः विशेषरूपसे होता रहता। इसलिये भगवान् श्रीसीतारामजीकी लीलाओंका वर्णन इनके पदोंमें विशेष रूपसे प्राप्त होता है। पूज्य मामाजी अपने इष्टदेवके प्रति शरणागत थे। उनकी ये धारणा थी कि परमात्म-प्रभु जहाँ, जैसे और जिस प्रकार रखेंगे; उसीमें मैं प्रसन्न हूँ। संयोगकी बात है, इनकी जीवन-लीलाका संवरण तब हुआ, जब वे एक कथा-सत्संगसे वापस सड़क-मार्गसे लौट रहे थे, मार्गमें इनकी गाड़ी एक वाहनको बचानेमें एक वृक्षसे टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। इसीमें पूज्य मामाजीका महाप्रयाण हो गया— उन्हें अपनी उपासनास्थली बक्सरमें लाया गया, जहाँ उनके अन्तिम दर्शनके लिये भक्तोंका सैलाब उमड़ पड़ा। विधिपूर्वक गंगातटपर उनका अन्तिम संस्कार सम्पन्न हुआ तथा श्राद्ध आदिका कार्य पूर्ण शास्त्रविधिसे सम्पन्न कराया गया।

आस्तिक जनोंमें पूज्य मामाजीके सत्संगका बड़ा महत्त्व था, इनकी कथाएँ सुननेके लिये प्रायः लोग प्रतीक्षा करते थे। निकट भविष्यमें पूज्य मामाजी-जैसे सन्तोंकी क्षति-पति सम्भव नहीं है।

**बोध-कथा—**

## परमात्मा सर्वव्यापक है

गुरु नानकदेवजी यात्रा करते हुए कराची, बिलोचिस्तानके स्थलमार्गसे मक्का पहुँच गये थे। जब रात्रि हुई, तब वे काबाकी परिक्रमामें काबाकी ओर ही पैर करके सो रहे। सबेरे मौलवियोंने उन्हें इस प्रकार सोते देखा तो क्रोधसे लाल होकर डाँटा—‘तु कौन है ? ख़्दाके घरकी ओर पैर पसारे पड़ा है, तज़्जे शरम नहीं आती ?’

गुरुने आँखें खोलीं और धीरेसे कहा—‘मैं तो थका-हारा मुसाफिर हूँ। जिधर खुदाका घर न हो, उधर मेरे पैर मेहरबानी करके कर दीजिये।’

मौलवी लोगोंको और क्रोध आया। उनमेंसे एकने गुरु नानकका पैर पकड़कर झटकेसे एक ओर खींचा; किंतु उसने देखा कि गुरुके पैर जिधर हटाता है, काबा तो उधर ही दीख पड़ता है। अब तो वे लोग उन महान् संतके चरणोंपर गिर पड़े।

गुरु नानकदेवने उन्हें समझाया—‘परमात्मा सर्वव्यापक है। उसका घर किसी एक ही स्थानमें है, यह मानना अज्ञान है।’

**गो-चिन्तन—**

## गोपालनमें सुधारकी अनिवार्यता

( श्रीमृल्लकराजजी विरमानी )

बहुत दुःखकी बात है कि हमारी देशी गायोंकी संख्या, जो स्वतन्त्रताके समय एक करोड़ थी, आज घटकर लगभग १५ लाखसे भी कम हो गयी है, जबकि हिन्दुस्तानकी जनसंख्या ३० करोड़से बढ़कर १३० करोड़से भी अधिक हो गयी है। भावनाओंकी बात नहीं करेंगे कि 'गाय जिस घरमें होती है, वह घर अधिक फलता-फूलता है।' लेकिन ये तो निश्चित है कि गायको हमने समझबूझकर माताकी संज्ञा दी है; क्योंकि वह हर प्रकारसे हमपर उपकार करती है। पोषणकी उपयोगिता इसीसे सिद्ध हो जाती है कि गायका दूध तो औषधि है ही, मगर इससे बननेवाले अनेकों पदार्थ भी बहुत उपयोगी हैं। गोबरसे अनेकों वस्तुएँ बनती हैं, गोमूत्र तो प्रामाणिक रूपसे लाभकारी है ही। मगर दुःखका विषय है कि इसका प्रचार समाजमें बहुत ही कम हुआ है। इस परिप्रेक्ष्यमें गायको बचानेके लिये सूझ-बूझके बिना ही प्रयत्न किये गये हैं। जैसे सरकारी स्तरपर गौशालाओंका निर्माण हुआ है, लेकिन उनमें गायोंकी देखभाल नहीं-के बराबर है।

एक गायके पुजारी, एक महात्माके बहुत बड़े मित्र हैं। मैं भी उन महात्माको अच्छी तरहसे जानता हूँ। उनसे एक वार्ताके दौरान मैंने पूछा कि ये महात्मा ६-७ गौशालाओंका नियन्त्रण कर रहे हैं और मैं भी इनकी कुछ गौशालाओंमें गया हूँ। इतनी बड़ी संख्यामें गौशालाओंका रख-रखाव कठिन ही नहीं, अपितु असम्भव भी है। मैंने उन सज्जनसे पूछा कि महात्माजीका वास्तवमें क्या उद्देश्य है? उन्होंने उत्तर दिया 'गाय कसाईके पास नहीं जानी चाहिये, ये एकमात्र लक्ष्य है।' मैंने उनकी गौशालाओंमें जानेपर देखा कि एक भी गाय जुगाली नहीं कर रही, बैठी है और इधर-उधर ध्यान लगाकर देखती है कि कहींसे खानेको और कुछ नहीं तो सखा भसा ही मिल जाय।

अब ये कहना तो कठिन है कि गाय भूखी मरे अथवा कसाईके यहाँ मरे तो क्या ठीक है ? मेरा मत है कि गाय अगर ठीक ढंगसे पाली जाय तो वह देशकी अर्थव्यवस्थाको सुदृढ़ करनेमें बहुत योगदान दे सकती है । आज हमने अपनी गलत सोचके कारण गायको बोझ समझकर कसाईके स्थानपर

हमारी एक हरियाणाकी ग्रामीण बहन हैं—रेनू सांगवान, जिनके साक्षात्कारका वीडियो गो-प्रेमियोंमें बहुत दिखाया गया। ये अकेली सौ गायोंकी एक गोशाला बहुत सुचारु ढंगसे चला रही हैं। लगभग दस व्यक्तियोंको नौकरी देकर उनके परिवारका पालन कर रही हैं और अपने लिये अच्छा आर्थिक लाभ भी ले रही हैं। कोई नासमझ ही उनके विचारोंको नहीं मानेगा। एक साक्षात्कारमें उन्होंने कहा, ‘गाय दूध नहीं देती, साँड़ दूध देता है’ ये घोषणा ऐसे लगती है कि वे बहुत गलत बोल रही हैं, परंतु उनकी पूरी बात सुनकर हमारे गोपालोंको समझना चाहिये। रेनू बहन कहती हैं कि साँड़ अगर अच्छी नस्लका हो और उसका पोषण ठीक हो तो उसी नस्लकी गायके साथ उसका मिलन (क्रॉस) करवाया जाय तो कोई कारण नहीं कि उक्त गाय १० से १५ लीटर दूध न दे, बल्कि वह स्वयं तो २४-२४ लीटरतक कई गायोंसे दूध प्राप्त करती हैं। कई नस्लोंकी गाय उनके यहाँ १० से १५ लीटर दूध देती हैं। वे अपने वक्तव्यमें कहती हैं ‘**बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ ते खाय**’। इसका तात्पर्य है कि हम नस्ल बिगाड़कर और गायकी बछिया-बछड़ेको उसके आवश्यकतानुसार दूध न पिलाकर गोवंशके साथ बहुत बड़ा अत्याचार कर रहे हैं। उन्होंने अपने पाले हुए साँड़ोंको वीडियोपर दिखाया कि वे कितने हष्ट-पुष्ट हैं, कई साँड़ तो हाथीके समान ऊँचे-लम्बे हैं।

उनका कहना है कि एक व्यक्ति अपनी कपिला नस्लकी गाय क्रॉस करवानेके लिये उनके पास आया। रेनूजीने उससे कहा कि मेरे पास तो स्वर्ण कपिलाका साँड़ है, मैं उसको साधारण कपिला गायके साथ मेल कराकर अपने बैलको खराब नहीं करना चाहती। उनके सारे गाय-बैल तो दर्शनीय हैं ही, छोटे बछड़े-बछिया भी हृष्ट-पुष्ट हैं; क्योंकि वे उन्हें माँका पूरा-का-पूरा दूध पिलानेमें कोई संकोच नहीं करती।

वे कहती हैं कि किसान अगर मेहनत नहीं करेगा तो कभी नहीं पनप सकता। वह स्वयं ११ बजे सोकर प्रातः ३ बजे उठकर काममें लग जाती हैं। गौ-पालकोंसे मैं विनम्र प्रार्थना करना चाहता हूँ कि वह इस लेखपर विचार करें ताकि गाय समाजपर आजकी स्थितिके अनुसार बोझ

## मूर्तिपूजा

( ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज )

कोई भी आस्तिक भक्त मूर्तिकी पूजा नहीं करता, वह तो मूर्तिमें अपने इष्टदेवकी पूजा करता है, इसलिये जबतक अपना भास रहे, तबतक अपने इष्टदेवकी पूजा करते रहना चाहिये।

जब मनुष्य किसी पुस्तक या चिट्ठीको पढ़ता है, तब कागज या स्याहीको नहीं पढ़ता; किंतु उसमें लिखे हुए संकेतके द्वारा उसके अर्थको पढ़ता है। कागज, स्याही और अक्षर तो उस अर्थको समझनेके लिये चिह्नमात्र हैं। अर्थ तो पढ़नेवालेकी बुद्धिमें परम्परासे विद्यमान है। इसी प्रकार भक्त मूर्तिको संकेत बनाकर अपने इष्टकी पूजा करता है, मूर्तिकी पूजा नहीं करता।

इसी तरह गीता आदिमें समझ लेना चाहिये। पढ़नेवाला उसे भगवान्‌की वाणी समझकर पढ़ता है और उसी भावसे उसका आदर करता है।

श्रीतुलसीदासजी राम-नामका जप करते थे तो उनके भावमें परमेश्वर और उनके पूर्ण ऐश्वर्य, माधुर्य आदि समस्त गुण नाममें भरे हुए थे, वे राम और ब्रह्म दोनोंसे नामको बढ़कर मानते थे। उनके विषयमें कोई भी यह नहीं कह सकता कि वे परमेश्वरका स्मरण नहीं कर रहे थे, शब्दमात्रका जप कर रहे थे। इससे साधकको यह समझ लेना चाहिये कि कोई भी साधन नीचे दर्जेका नहीं है।

जिस साधकको जो साधन प्रिय हो, अपनी योग्यताके अनुसार जिस साधनको वह सुगमतासे कर सके, जिसमें उसका पूर्ण विश्वास हो, किसी प्रकारका भी सन्देह न रहे, वही साधन उसके लिये सर्वश्रेष्ठ है। किसी प्रकारका सन्देह न रहनेसे साधककी बुद्धि साधनमें लग जाती है। प्रेम होनेसे हृदय द्रवित हो जाता है। विश्वास होनेके कारण मनमें किसी प्रकारका विकल्प नहीं उठता। उसमें मन लग जाता है। अतः साधनमें कोई छोटा-बड़ा नहीं है।

किसी भी साधकको यह नहीं समझना चाहिये कि 'मुझे अमुक प्रकारकी योग्यता प्राप्त नहीं है, इसलिये

मुझे भगवान् नहीं मिल सकते।' यह मानना भगवान्‌की महिमाको न जानकर उनकी कृपाका अनादर करना है; क्योंकि भगवान् अपनी कृपासे प्रेरित होकर ही साधकको मिलते हैं। उनकी कृपा प्राप्त करनेका एकमात्र उपाय उनसे मिलनेकी उत्कण्ठा, उनके प्रेमकी अतिशय लालसा ही है। धन, बल, सुन्दरता या किसी प्रकारके साधनके बलसे भगवान् नहीं मिल सकते। साधन उनका या उनके प्रेमका मूल्य नहीं है। साधन तो अपने बनाये हुए दोषोंको मिटानेके लिये है, जो भगवान्‌द्वारा दी हुई योग्यताका सदुपयोग करनेमात्रसे होता है।

मनुष्य चाहे कैसा ही दीन-हीन मलिन क्यों न हो, कितना ही बड़ा पातकी क्यों न हो, वह जैसा और जिस परिस्थितिमें है, उसीमें यदि विश्वासपूर्वक भगवान्‌का हो जाय और उनको पानेके लिये व्याकुल हो उठे, भगवान्‌के वियोगमें उसे किसी प्रकार चैन न पड़े, तो भगवान् अवश्य मिल जाते हैं।

भगवान् उसी पतितको मिलते हैं, जो पतित नहीं रहना चाहता अर्थात् पुनः पाप नहीं करना चाहता। ऐसे साधकको भगवान् परम पवित्र बनाकर अपना लेते हैं, परंतु जिसको अपने पापोंका पश्चात्ताप नहीं है, जो उनको छोड़ना नहीं चाहता, उसे भगवान् नहीं मिलते। वैसे ही जिसको अपने गुणोंका अभिमान होता है, उसे भी नहीं मिलते। साथ ही यह बात भी है कि जबतक साधकके मनमें किसी दूसरी वस्तुकी चाह रहती है, तबतक भगवान् नहीं मिलते। किंतु उसकी चाहके अनुरूप वस्तु और परिस्थिति, यदि उसके पतनमें हेतु न हो तो प्रदान कर देते हैं।

भगवान्की यह शर्त है कि मुझसे मिलनेके बाद अन्य किसीसे साधक नहीं मिल सकता, परंतु ऐसा साधक कोई बिरला ही होता है, जो हर समय एकमात्र उन्हींसे मिलनेके लिये इच्छुक रहता हो, जिसके समस्त काम पूरे हो चुके हों, जिसके मनमें अन्य किसी प्रकारके संयोगकी चाह नहीं रही हो।



## ( सुभाषित-त्रिवेणी )

**परमात्माका स्वरूप**

**[Form of God]**

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।

सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति॥

वह सब ओर हाथ-पैरवाला, सब ओर नेत्र, सिर और मुखवाला तथा सब ओर कानवाला है; क्योंकि वह संसारमें सबको व्याप्त करके स्थित है।

It has hands and feet on all sides, eyes, head and mouth in all directions, and ears all-round; for it stands pervading all in the universe.

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।

असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च॥

वह सम्पूर्ण इन्द्रियोंके विषयोंको जाननेवाला है, परन्तु वास्तवमें सब इन्द्रियोंसे रहित है तथा आसक्ति-रहित होनेपर भी सबका धारण-पोषण करनेवाला और निर्गुण होनेपर भी गुणोंको भोगनेवाला है।

Though perceiving all sense-objects, it is really speaking devoid of all senses. Nay, though unattached, it is the sustainer of all nonetheless; and though attributeless, it is the enjoyer of all gunas, the three modes of Prakrti.

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च।

सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्॥

वह चराचर सब भूतोंके बाहर-भीतर परिपूर्ण है और चर-अचर भी वही है। और वह सूक्ष्म होनेसे अविज्ञेय है तथा अति समीपमें और दूरमें भी स्थित वही है।

It exists without and within all beings, and constitutes the animate and inanimate creation as well. And by reason of its subtlety, it is incomprehensible; it is close at hand and stands afar too.

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।

भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च॥

वह परमात्मा विभागरहित एक रूपसे आकाशके सदृश

परिपूर्ण होनेपर भी चराचर सम्पूर्ण भूतोंमें विभक्त-सा स्थित प्रतीत होता है तथा वह जाननेयोग्य परमात्मा विष्णुरूपसे भूतोंको धारण-पोषण करनेवाला और रुद्ररूपसे संहार करनेवाला तथा ब्रह्मारूपसे सबको उत्पन्न करनेवाला है।

Though integral like space in its undivided aspect, it appears divided as it were in all animate and inanimate beings. And that Godhead, which is the only object worth knowing, is the sustainer of being (as Visnu), the destroyer (as Rudra) and the creator of all (as Brahma).

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।

ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्॥

वह परब्रह्म ज्योतियोंका भी ज्योति एवं मायासे अत्यन्त परे कहा जाता है। वह परमात्मा बोधस्वरूप, जाननेके योग्य एवं तत्त्वज्ञानसे प्राप्त करनेयोग्य है और सबके हृदयमें विशेषरूपसे स्थित है।

That supreme Brahma is said to be the light of all lights and entirely beyond Maya. That godhead is knowledge itself, worth knowing, and worth attaining through real wisdom, and is particularly abiding in hearts of all.

इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः।

मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते॥

इस प्रकार क्षेत्र तथा ज्ञान और जाननेयोग्य परमात्माका स्वरूप संक्षेपसे कहा गया। मेरा भक्त इसको तत्त्वसे जानकर मेरे स्वरूपको प्राप्त होता है।

Thus the truth of the Ksetra and knowledge, as well as of the object worth knowing, God has been briefly discussed; knowing this in reality. My devotee enters into My being.



## कृपानुभूति

### श्रीदुर्गासप्तशतीके अनुष्ठानसे माँके दिव्य दर्शन

यह घटना सन् १९७० ई० के नवरात्रकी है, जब मैं श्रम-मंत्रालय (भारत-सरकार)-द्वारा संचालित अभ्रक खान श्रमहितकारी कोष भीलवाड़में उपवैद्यके पदपर नियुक्त हुआ था। घरवालोंसे दूर रहकर प्रथम बार पृथक् नवरात्र-पूजन करनेका कार्यक्रम बनाया। इससे पूर्व पूजन की पारिवारिक परम्परानुसार छोटे-बड़े हम सभी लोग श्रद्धापूर्वक सम्मिलित रूपसे दुर्गा माँकी जोत लेते और एक बार भोजन करते रहे थे।

मैं दुर्गापाठमें अभी पूर्ण पारंगत नहीं हुआ था, अतः दुर्गा-उपासक पिताजीने निर्देश दिया कि अपने शासकीय कार्यकालके अतिरिक्त सुबह या अपराह्नमें चण्डीपाठ (साधारण) एवं आपदुद्धारक बटुकपाठ-सहित यथाशक्ति 'ॐ ह्रीं नमः' मंत्रका जप करना है। हो सके तो अष्टमीकी रात्रिको इसी मंत्रकी एक मालाका हवन करना है।

मैं अपने कार्यस्थल भादू ग्राममें एक वैश्यबन्धुके मकानमें अकेला रहता था। कार्यक्रमानुसार प्रातः शौच-स्नानादि कार्योंसे निवृत्त होकर पाटेपर स्थापित माँके चित्र एवं कलशकी पूजा करके बोये जँवारोंको सींचता और जोत देखता था। अपना पूजाकार्य समाप्तकर तथा चाय-दूध-फलाहार लेकर कार्यस्थलपर पहुँच जाता था। अपराह्न घर आनेपर पुनः स्नानकर पाठ एवं जप पूर्ण कर लेता था। सायंकाल भोजनके पश्चात् पुनः यथाशक्ति 'ॐ ह्रीं नमः' का जपकर सो जाता था। आठ दिनतक यह कार्य अनवरत सुगमतापूर्वक चला। अष्टमीकी रात्रिको कुछ हवन-सामग्री एवं घी लेकर आहुति देनेकी तैयारी की।

हवनमें बैठनेसे पूर्व जीनेका दरवाजा एवं कमरेका

दरवाजा दोनों बन्द कर लिये और धुआँ निकलनेके लिये खिड़कियाँ खोलकर तन्मयतापूर्वक हवनके लिये प्रस्तुत हुआ। यह रात्रि ११-१२ बजेकी घटना है। जिस समय मैं आहुति दे रहा था, तभी नीचे एवं ऊपरके दोनों द्वारोंके किवाड़ अपने-आप खुल गये और पाटेके ऊपर एक षोडशी कन्या बैठी हुई दीख पड़ी, जो मन्द-मन्द मुसकुरा रही थी। उसके शरीरपर लाल वस्त्र चमक रहे थे, और वह मुझे देख रही थी। मैं भी अपलक होकर उसे देखता रहा, मन्त्र आहुति रुक गयी। कुछ क्षणोंके बाद वह अदृश्य हो गयी, मैं डर-सा गया था। शरीर पसीनेसे तर-बतर हो गया। जैसे-तैसे आहुतिकार्य सम्पूर्णकर जब मैंने पीछे देखा तो कमरेके और जीनेके दरवाजे पूरी तरहसे खुले हुए थे। परिवारके सब लोग सोये हुए थे। किसीको इस घटनाका ज्ञान नहीं हुआ—मैं इस बातसे अत्यन्त विस्मित होकर विश्राम करने लगा। दो दिन बाद दशहरेकी छुट्टी थी, उसमें मैं घर चला आया। मैंने पिताजीको सम्पूर्ण घटनासे अवगत कराया तो वे हँसने लगे और बोले—'धन्य है! बेटा! तूने तो पहली बारमें ही दर्शन कर लिया। माँ अपने छोटे और अज्ञानी बेटेपर अधिक ध्यान देती हैं। तू परीक्षामें तो उत्तीर्ण हो गया।'।

जीवनके द्वितीय पड़ावका वह अलौकिक दृश्य, भगवतीके श्रीविग्रहका प्रकाश एवं उनकी सुन्दरताकी छटाका स्मरणकर मैं आज भी रोमांचित एवं मुग्ध हो जाता हूँ।

‘बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति’

—सुरेशचन्द्र मिश्र

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

हे नारायणि ! तुम सब प्रकारका मंगल प्रदान करनेवाली मंगलमयी हो । कल्यादायिनी शिवा हो । सब पुरुषार्थोंको

मिद करनेवाली शरणगन्तव्यमाला, तीन नेत्रोंवाली एवं गौरी हो । तुम्हें नमस्कार है । श्रीदुर्गासप्तशती ११ । १० ।

Hinduism Discord Server <https://discord.gg/dharma> | MADE WITH LOVE BY Avirash/Sh

## पढ़ो, समझो और करो

(१)

### सत्साहित्यके पठनसे जीवन-निर्माण

मैं कक्षा ६-७ में था, थोड़ा-सा पैसा कहीं मिलता तो पैदल चलकर रेलवे-स्टेशनसे गीताप्रेसकी सस्ती पुस्तकें खरीद लाता और पूरा पढ़ डालता, इसी क्रममें मैंने 'भाईजी' लिखित 'तुलसीदल', गोयन्दकाजीकी 'तत्त्व-चिन्तामणि', पढ़ी तथा तभीसे कल्याणका नियमित ग्राहक बन गया। मुझे लेख पढ़ने एवं पुस्तकोंके संग्रहकी लत-सी पड़ गयी, परिणाम यह हुआ कि सामान्य कार्य करते हुए निरन्तर भगवन्नाम विशेषकर 'हरे राम'—'हरे हरे' का स्मरणात्मक उपांशु जप श्वास-प्रश्वासद्वारा होने लगा। शास्त्रानुशीलनका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा कि इसे प्रमाण मानकर कार्य-अकार्य (उचित-अनुचित)—का निर्णय एवं कर्तव्यानुपालनमें मेरा दृढ़ निश्चय बना रहा।

नामस्मरण तथा शास्त्रानुशीलनके अद्भुत प्रभावके बहुतसे अवसर मेरे जीवनमें आये, प्रत्येक घटनाके बाद विश्वास बढ़ता गया। यहाँ अबतक कभी, किसीके लिये प्रकट न की गयी, कतिपय घटनाओंका स्मरण 'कल्याण' के पाठकोंके हितार्थ विज्ञापित किया जा रहा है—

१-घटना १९८२ ई० की है, मैंने हाईस्कूलकी परीक्षा दी, मेरी गणना गाँव एवं स्कूलके अच्छे छात्रोंमें की जाती थी, परंतु समाचार-पत्रोंमें रिजल्ट आया, तो मैं उत्तीर्ण नहीं था, फिर क्या था; घर-समाज सर्वत्र उलाहनोंकी बौछार होने लगी, मैंने सब कुछ सहन किया और बढ़ा दिया 'हरे राम'—'हरे हरे' का स्मरण। उस समय अंकतालिका बहुत विलम्बसे आती थी, एक दिन पिताजी शहरसे सायकिलद्वारा सीधे वहाँ पहुँचे, जहाँ मैं गाँवके बुजुर्गोंके मध्य घोर दुपहरीमें भैंस चरा रहा था। पहुँचते ही उन्होंने सबके पैर छूनेको कहा, मैंने बिना कुछ समझे और प्रतिवादके आदेशका अनुपालन किया। तब उन्होंने बताया कि 'पूरे विद्यालयमें तुम्हारेसहित दो लोग ही प्रथम श्रेणीमें पास हुए हैं, मैंने ईश्वरको धन्यवाद दिया, बादमें यह क्रम एम०एस-सी०, पी-एच०डी० तक बना रहा।'।

२-एक बार कम्पनीके कार्यसे जलगाँवसे कलकत्ता तेजपुर होते हुए एक टी गार्डनका निरीक्षण करने उत्तरी आसाम जाना था, साथमें एक आई०आई०टी०से एम०टेक० किये इंजीनियर तथा एक सहायक था। कलकत्तासे तेजपुर जाते समय रात्रिमें १२ बजे मेरी डीलक्स बस फरक्का पहुँची थी; मैं खिड़कीके किनारे विद्युत् परियोजना क्षेत्र देख रहा था, कि अन्तःप्रेरणासे मैंने रामरक्षास्तोत्रका स्मरण किया और अन्तिम श्लोक 'राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने॥' आते ही श्रद्धासे नेत्र उन्मीलित करके सिर झुकाया ही था, तभी दायीं तरफके चक्के एक गहरे गड्ढेमें गये तथा गाड़ीकी तीव्र गति होनेके कारण निकल भी गये, परंतु गाड़ीमें तीव्र झटका लगनेसे दो इंचका खिड़की उठानेवाला मोटा राड पूरे वेगसे मेरी दायीं आँखमें पूरा घुस गया। असह्य पीड़ाके साथ पूरा गाल-गला आदि अश्रुओंसे भीग गया, भयाक्रान्त हुआ कि पूरे जन्म अन्धा रहना पड़ेगा, बगलके इंजीनियर और सहायकको बतानेकी हिम्मत नहीं हुई, थोड़ी देर बाद काँपते हाथोंसे आँखको टटोला तो दर्दके बीच सब ठीक मिला।

३-ए०आर०एस० तथा तीन बार असिस्टेंट प्रोफेसर पदपर चयनके बाद भी ज्वाइन न कर सका। मेरठमें साधारण नौकरी शुरू की। पत्नी गर्भवती थी, दो परीक्षणोंमें सब कुछ सामान्य होते हुए भी अन्तिम परीक्षणमें डाक्टरोंने पत्नीके बच्चेदानीकी पानीकी थैलीके सूखने/फटनेकी बात तथा जच्चा-बच्चाके जानका खतरा बताकर घबड़ावा दिया, अपने गुरुके सुझावसे सन्तानगोपाल मन्त्र तथा नारायण-कवचका पाठ करने लगा, समयपर पूर्ण स्वस्थ बच्चा घरपर बिना ऑपरेशन पैदा हुआ।

४-नौकरीमें एक बार सलेमपुरमें ट्रान्सफार्मर जल जानेके कारण गर्मीसे राहतके लिये 'गण्डकी-तट' पर जा रहा था, जैसे ही स्कूटर स्टेशनके सामने हनुमान्जीकी एक मूर्तिके सामनेसे गुजरा, संस्कारवश ढाई-तीन वर्षका एक बच्चा बोला—'जै बजरंग बली', स्कूटरसे चलते हुए



—उमेश प्रसाद सिंह

## मनन करने योग्य

### तृष्णा ही दुःखका कारण

चन्द्रवंशमें नहुष नामके एक चक्रवर्ती सम्राट् थे। उनके यति, ययाति, संयाति, आयाति, वियाति और कृति-नामक छः महाबलविक्रमशाली पुत्र हुए। यतिने राज्यकी इच्छा नहीं की, इसलिये ययाति ही राजा हुआ। ययातिने शुक्राचार्यजीकी पुत्री देवयानी और वृषपर्वाकी कन्या शर्मिष्ठासे विवाह किया था। देवयानीने यदु और तुर्वसुको जन्म दिया तथा वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठाने द्रुह्य, अनु और पूरुको उत्पन्न किया।

ययातिको शुक्राचार्यजीके शापसे युवावस्थामें ही बुढ़ापेने घेर लिया था। पीछे शुक्रजीके प्रसन्न होकर आज्ञा देनेपर उन्होंने अपनी वृद्धावस्थाको ग्रहण करनेके लिये बड़े पुत्र यदुसे कहा—‘वत्स! तुम्हारे नानाजीके शापसे मुझे असमयमें ही वृद्धावस्थाने घेर लिया है, अब उन्हींकी कृपासे मैं उसे तुमको देना चाहता हूँ। मैं अभी विषय-भोगोंसे तृप्त नहीं हुआ हूँ, इसलिये एक सहस्र वर्षतक मैं तुम्हारी युवावस्थासे उन्हें भोगना चाहता हूँ। इस विषयमें तुम्हें किसी प्रकारकी आनाकानी नहीं करनी चाहिये।’ किंतु पिताके ऐसा कहनेपर भी यदुने वृद्धावस्थाको ग्रहण करना न चाहा। तब पिताने उसे शाप दिया कि तेरी सन्तान राजपदके योग्य न होगी।

फिर राजा ययातिने तुर्वसु, द्रुह्य और अनुसे भी अपना यौवन देकर वृद्धावस्था ग्रहण करनेके लिये कहा, तथा उनमेंसे प्रत्येकके अस्वीकार करनेपर उन्होंने उन सभीको शाप दे दिया। अन्तमें सबसे छोटे शर्मिष्ठाके पुत्र पूरुसे भी वही बात कही तो उसने अति नम्रता और आदरके साथ पिताको प्रणाम करके उदारतापूर्वक कहा—‘यह तो हमारे ऊपर आपका महान् अनुग्रह है।’ ऐसा कहकर पूरुने अपने पिताकी वृद्धावस्था ग्रहणकर उन्हें अपनी युवावस्था दे दी।

राजा ययातिने पूरुकी युवावस्था लेकर समयानुसार

प्राप्त हुए यथेच्छ विषयोंको अपने उत्साहके अनुसार धर्मपूर्वक भोगा और अपनी प्रजाका भली प्रकार पालन किया। फिर शर्मिष्ठा और देवयानीके साथ विविध भोगोंको भोगते हुए ‘मैं कामनाओंका अन्त कर दूँगा’—ऐसा सोचते-सोचते वे क्षुब्धचित्त हो गये तथा उन्होंने इस प्रकार अपना उद्गार प्रकट किया—

‘भोगोंकी तृष्णा उनके भोगनेसे कभी शान्त नहीं होती, बल्कि घृताहुतिसे अग्निके समान वह बढ़ती ही जाती है। सम्पूर्ण पृथ्वीमें जितने भी धान्य, यव, सुवर्ण, पशु और स्त्रियाँ हैं, वे सब एक मनुष्यके लिये भी पर्याप्त नहीं हैं, इसलिये तृष्णाको सर्वथा त्याग देना चाहिये। जिस समय कोई पुरुष किसी भी प्राणीके लिये पापमयी भावना नहीं करता, उस समय उस समदर्शीके लिये सभी दिशाएँ सुखमयी हो जाती हैं। दुर्मतियोंके लिये जो अत्यन्त दुस्त्यज है तथा वृद्धावस्थामें भी जो शिथिल नहीं होती, बुद्धिमान् पुरुष उस तृष्णाको त्यागकर सुखसे परिपूर्ण हो जाता है। अवस्थाके जीर्ण होनेपर केश और दाँत तो जीर्ण हो जाते हैं, किंतु जीवन और धनकी आशाएँ उसकी जीर्ण होनेपर भी जीर्ण नहीं होतीं।\* विषयोंमें आसक्त रहते हुए मुझे एक सहस्र वर्ष बीत गये, फिर भी नित्य ही उनमें मेरी कामना होती है। अतः अब मैं इसे छोड़कर अपने चित्तको भगवान्में ही स्थिरकर निर्द्वन्द्व और निर्मम होकर वनमें विचरूँगा।’

तदनन्तर राजा ययातिने पूरुसे अपनी वृद्धावस्था वापस लेकर उसकी युवावस्था लौटा दी। फिर उन्होंने दक्षिण-पूर्व दिशामें तुर्वसुको, पश्चिममें द्रुह्यको, दक्षिणमें यदुको और उत्तरमें अनुको (पूरुके अधीनस्थ) माण्डलिकपदपर नियुक्त किया तथा पूरुको सम्पूर्ण भूमण्डलके राज्यपर अभिषिक्तकर स्वयं वनको चले गये।

\* न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मैव भूय एवाभिवर्धते॥

यत्पृथिव्यां ब्रीहियवं हिरण्यं पशवः स्त्रियः। एकस्यापि न पर्याप्तं तस्मात्तृष्णां परित्यजेत्॥

यदा न कुरुते भावं सर्वभूतेषु पापकम्। समदृष्टेस्तदा पुंसः सर्वाः सुखमया दिशः॥

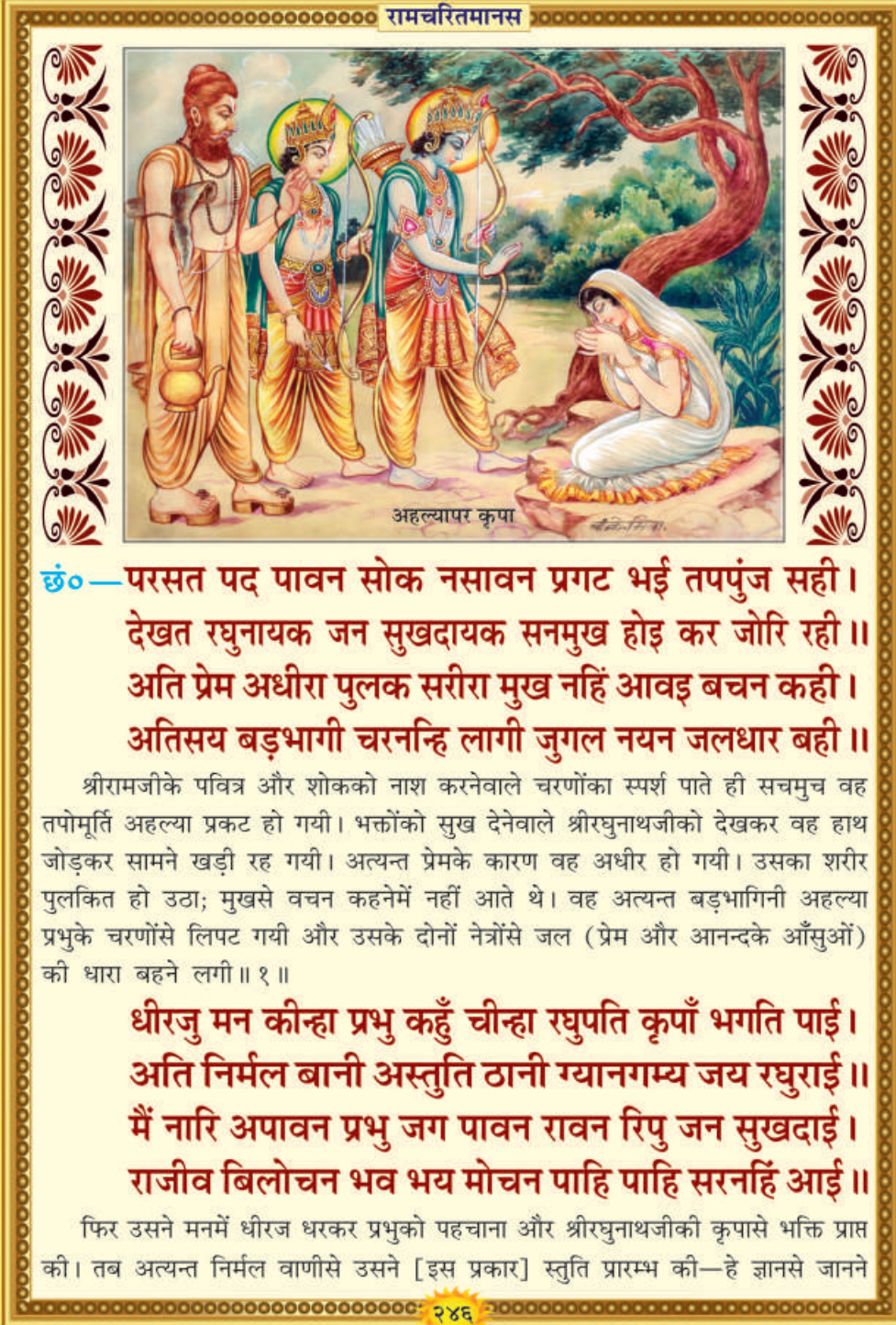
या दुस्त्यजः दुर्मतिभिर्या न जीर्यति जीर्यतः। तां तृष्णां सन्त्यजेत्प्राज्ञः सुखंनैवधिपर्यजे॥

जीर्यन्ति जीर्यतः कशा दन्ता जीर्यन्ति जीर्यतः। धनाशा जीवताशा च जीर्यताऽपि न जीर्यतः॥ (वि०पु० ४।१०।२३—२७)



## नवीन विशिष्ट प्रकाशन—शीघ्र प्रकाश्य

चित्रमय श्रीरामचरितमानस ( कोड 2295 ) [ ग्रंथाकार, सटीक चार रंगोंमें आर्ट पेपरपर ] जिज्ञासु पाठकोंकी विशेष माँगपर 300 आकर्षक रंगीन चित्रोंके साथ पहली बार प्रकाशित हो रहा है। मूल्य ₹ 1600







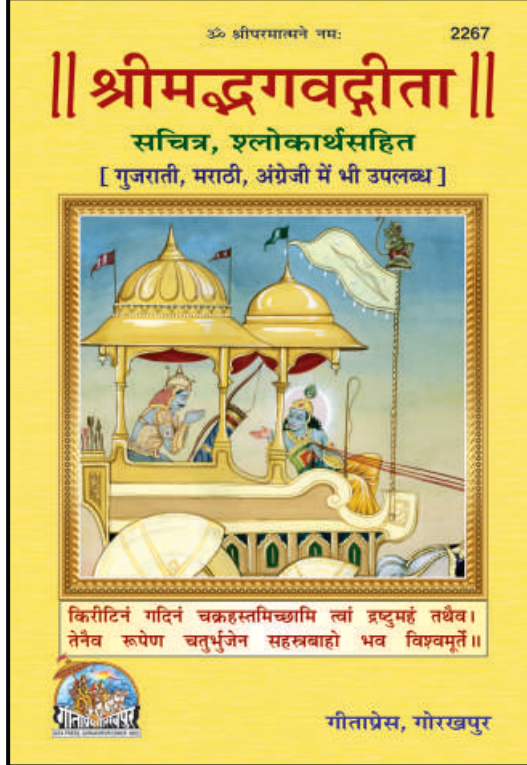
**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**  
  
**By**  
**Avinash/Shashi**

**Icreator of**  
**hinduism**  
**server!**

LICENSED TO POST WITHOUT PRE-PAYMENT LICENCE No. WPP/GR-03/2020-2022

**श्रीमद्भगवद्गीता—सचित्र, श्लोकार्थसहित****[ हिन्दी, गुजराती, मराठी तथा अंग्रेजीमें उपलब्ध ]**

विश्व-साहित्यमें श्रीमद्भगवद्गीताका अद्वितीय स्थान है। मनुष्यमात्रको कर्तव्य और मुक्तिकी शिक्षा प्रदान करनेवाला यह एक अलौकिक एवं प्रासादिक ग्रन्थ है। इसमें स्वयं भगवान्ने अर्जुनको निमित्त बनाकर मनुष्यमात्रके कल्याणके लिये उपदेश दिया है। इस छोटे-से ग्रन्थमें भगवान्ने अपने हृदयके बहुत ही विलक्षण भाव भर दिये हैं, जिनका आजतक कोई पार नहीं पा सका और न पा ही सकता है।

प्रस्तुत ग्रन्थमें श्रीगीताके मूल श्लोकोंके साथ सरल भाषामें उसका अर्थ और अन्तमें आरती दी गयी है। साथ ही प्रसङ्गानुकूल यथास्थान बहुत ही मनोरम 129 आकर्षक चित्रोंको भी दिया गया है।

आशा है, इसके स्वाध्यायसे सामान्य-से-सामान्य व्यक्ति भी गीताके भावोंको आसानीसे हृदयंगम कर अपने जीवनको धन्य कर सकता है।

(कोड 2267) हिन्दी मू०र०250

(कोड 2269) गुजराती मू०र०250

(कोड 2271) मराठी मू०र०250

(कोड 2283) अंग्रेजी मू०र०250

**अप्रैल 2021 से मार्च 2022 तक प्रकाशित नवीन प्रकाशन**

कोड	पुस्तक-नाम	मू०र०	कोड	पुस्तक-नाम	मू०र०	कोड	पुस्तक-नाम	मू०र०	कोड	पुस्तक-नाम	मू०र०
2267	श्रीमद्भगवद्गीता सचित्र श्लोकार्थसहित	250	2285	श्रीज्ञानेश्वरी सटीक	150	2292	अच्छे बनो	10		<b>नेपाली</b>	
2270	अयोध्या-दर्शन	25	2286	सचित्र सुन्दरकाण्ड मूल बेड़िआ रंगीन	30	2293	सत्संगका प्रसाद	10	2273	अध्यात्मरामायण	150
	<b>गुजराती</b>			<b>बँगला</b>			<b>असमिया</b>		2272	गीता-माहात्म्यसहित	70
2269	श्रीमद्भगवद्गीता सचित्र श्लोकार्थसहित	250	2275	ब्रह्मचर्य विज्ञान	60	2277	गीता-साधक-संजीवनी	450		<b>ENGLISH</b>	
2276	कूर्मपुराण	170	2274	श्रीचैतन्यभागवत	200		<b>मराठी</b>		2283	Śrīmadbhagavadgītā (with Sanskrit Text and English Translation in four colour)	250
2290	मत्स्यमहापुराण	380	2288	श्रीश्रीगीता एवं रामायण	15	2271	श्रीमद्भगवद्गीता सचित्र श्लोकार्थसहित	250			
2284	सुन्दरकाण्ड मूल बृहदाकार टाइप	60	2289	भागवत नवनीत	200		<b>तेलुगु</b>				
			2291	जीवनका सत्य	10	2287	श्रीललिताविष्णुसहस्रनाम- स्तोत्र मंजरी	40			

**booksales@gitapress.org** थोक पुस्तकोंसे सम्बन्धित सन्देश भेजें।**gitapress.org** सूची-पत्र एवं पुस्तकोंका विवरण पढ़ें।

कूरियर/डाकसे मँगवानेके लिये गीताप्रेस, गोरखपुर—273005

**book.gitapress.org / gitapressbookshop.in****If not delivered; please return to Gita Press, Gorakhpur—273005 (U.P.)**